Daksh®

11 दिसम्बर 2024 को जारी पाठ्यक्रमानुसार

RSSB द्वारा आयोजित सीधी भर्ती परीक्षा

No.1

A Complete Guide (Covering 100% Syllabus)

जेल प्रहरी

2025

- 29 दिसम्बर 2024 को जारी अधिसूचना (41 जिलें एवं 7 सम्भाग) के अनुसार
- विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों के विश्लेषण पर आधारित
- पाठ्यक्रम में शामिल प्रत्येक बिन्दु पर आधारित प्रश्नों का महत्व के अनुसार समावेश
- मॉडल पेपर नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार सम्पूर्ण हल एवं व्याख्या सहित

Buy Online at :

WWW.DAKSHBOOKS.COM

दक्ष®

प्रकाशक :

परितोष वर्धन जैन

कॉलेज बुक सेन्टर

- A-19, सेठी कॉलोनी,
  जयपुर-302 004

© सर्वाधिकार
प्रकाशकाधीन

लेजर टाईपसैटिंग :

पूजा एण्टरप्राईजेज़
जयपुर

मुद्रक :

के.डी. प्रिन्टर्स
जयपुर।

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

द्वारा आयोजित

Syallbus

Logical and Analytical Qualification:

Statement and assumptions, statement and argument, statement and conclusion, statement and action, number series, letter series, finding the odd, coding-decoding, relations, pictures and their subdivided related problems etc.

Major Current Events:

1. Issues related to sports, politics, economy, social, geographical, cultural, ecological and technical fields etc.
2. State & national issues.
3. Famous personalities.
4. State, national program and policy etc.

General Science :

1. Physical and chemical changes.
2. Metals, non-metals and major compounds.
3. Reflection and laws of light.
4. General terminology related to genetics.
5. Human body: structure, organ systems.
6. Major human diseases, causes and diagnosis, waste management.

Disater Management & Climate Change:

1. Disaster management : introduction, classification (natural and man-made disasters).
2. Role and functional framework of national and international agencies working for the cause of disaster management and climate change.
3. Disaster management: strategies and measures.
   -national policy and plan for disaster management and climate change.
4. Human impacts on the environment: deforestation, pollution, overexploitation of resources, impact ecosystems and biodiversity conservation & environmental protection.

Indian Constitution and Political and Administrative System with Special reference to the state of Rajasthan:

1. Introduction and basic features of the Constitution.
2. Right to Information Act etc.
3. State governance and politics - Governor, Chief Minister and Cabinet, Legislative Assembly and Judiciary.
4. Administrative structure of the state: Chief Secretary, District Administration (General Administration and Police Administration), Judicial Structure at the District Level.

History, Art and Culture of Rajasthan:

Main historical events, freedom movement, integration, important personalities, language and literature, folk culture and social life, costumes, musical instruments, folk deities, folk literature, dialects, fair & festivals, ornaments, folk art, architecture, folk music, dance, theatres, tourist places and monuments, celebrities of Rajasthan from historical and cultural point of view etc.

Geography:

Rajasthan-location, extent, physiography and physical division, soil, natural vegetation and forest conservation, climate, water resource, drainage system and lakes, major irrigation projects, population- size, growth, distribution, density, sex ratio and literacy, transport of Rajasthan & state road etc.

Economics-Rajasthan:

Rural development, Role of industry, agriculture, animal husbandry and mineral sector in the development of the state, State econom- features and problems, State income, concept of budget, Challenges before state economy etc.

पाठ्यक्रम के प्रकाशन में हालांकि पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी अभ्यर्थी 'राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर' द्वारा प्रकाशित मूल पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें, अन्यथा किसी गलती के लिए प्रकाशन जिम्मेदार नहीं होगा।

Code No.: D-816

- *प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी प्रणाली के सहारे पुन:उत्पत्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके (इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फॉटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, डिजिटल, वेब) के माध्यम से अथवा इस पुस्तक का नाम, टाईटल, चित्र, रेखाचित्र, नक्शे, डिजाईन, कवर डिजाईन, सैटिंग, शिक्षण-सामग्री, विषय-वस्तु, पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी भाषा में हूबहू या तोड़-मरोड़ कर या अदल-बदल कर प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक के प्रतिलिप्याधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।*
- *पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है। पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक, प्रूफ रीडर, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी अधूरी या पुरानी जानकारी का होना/कुछ ग़लतियों/कमियों का रह जाना मानवीय भूलवंश सम्भव है, जिसके लिए पुस्तक प्रकाशन से जुड़े मुद्रक, लेखक एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।*
- *सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर (राज.) होगा।*

अनुक्रमणिका

क्र. स. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

❖ जेल प्रहरी मॉडल पेपर M-1–M-10

Unit-I : विवेचना एवं तार्किक योग्यता 1–208

1 कथन एवं पूर्वधारणाएँ [Statement and Assumptions] 1
2 कथन एवं तर्क [Statement and Arguments] 11
3 कथन एवं निष्कर्ष [Statement and Conclusions] 18
4 कथन एवं कार्यवाहियाँ [Statement and Course of Action] 33
5 संख्या एवं अक्षर शृंखला [Number and Letter Series] 38
6 विषम ज्ञात करना [Finding the Odd] 58
7 कूटलेखन एवं कूटवाचन [Coding and Decoding] 68
8 रक्त सम्बन्ध [Blood Relation] 87
9 वेन आरेख [Venn Diagram] 100
10 सन्निहित आकृतियाँ [Embedded Figures] 114
11 आकृति पूर्ति [Figure Completion] 122
12 आकृतियों की गिनती [Counting of Figures] 133
13 घन, घनाभ एवं पासा [Cube, Cuboid and Dice] 147
14 लुप्त संख्या ज्ञात करना [Finding the Missing Number] 154
15 दर्पण एवं जल प्रतिबिम्ब [Mirror and Water Images] 168
16 घड़ी [Clock] 184
17 कैलेण्डर [Calendar] 189
18 दिशा और दूरी [Direction and Distance] 194
19 बैठक व्यवस्थीकरण [Seating Arrangements] 201
20 कागज को मोड़ना-खोलना, छिद्रित करना, काटना [Paper Folding-Unfolding, Punching, Cutting] 205

Unit-II : सामान्य विज्ञान 209–288

1 भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन [Physical and Chemical Changes] 209
2 धातु, अधातु एवं प्रमुख यौगिक [Metals, Non-Metals & Major Compound] 214

क्र. स. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

3 प्रकाश का परावर्तन एवं नियम [Reflection and Law of Light] 228
4 आनुवांशिकी से संबंधित सामान्य शब्दावली
[General Terminology related to Genetics] 244
5 मानव शरीर : संरचना एवं अंगतंत्र
[Human Body : Structure and Organ Systems] 250
6 प्रमुख मानव रोग, कारक एवं निदान
[Major Human Diseases, Caused & Diagnosis] 270
7 अपशिष्ट प्रबंधन [Waste Management] 279

Unit-II : आपदा प्रबन्धन एवं जलवायु परिवर्तन 289–352

1 आपदा प्रबन्धन (परिचय एवं वर्गीकरण)
[Disaster Management (Introduction and Classification)] .. 289
2 आपदा प्रबन्धन की राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियाँ [National & International Agencies of Disaster Management] 301
3 आपदा प्रबन्धन रणनीतियाँ एवं उपाय
[Disaster Management Strategies and Measures] 316
4 पर्यावरण पर मानवीय प्रभाव [Human Impacts on the Environment] . 322
5 पर्यावरण प्रदूषण [Environment Pollution] 326
6 पारिस्थितिकी तंत्र [Ecosystem] 335
7 जैव विविधता [Biodiversity] 346

Unit-II : भारतीय संविधान एवं राजस्थान के विशेष संदर्भ में राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था 353–

1 संविधान का परिचय एवं आधारभूत लक्षण
[Introduction & Basic Features of the Constitution] 353
2 सूचना का अधिकार अधिनियम [Right to Information Act] 372
3 राज्य शासन एवं राजनीति [State Governance and Politics] 378
4 राज्य का प्रशासनिक ढाँचा [Administrative Structure of the State] .. 389

Unit-III : राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति 395–492

1 राजस्थान की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ
[Main Historical Events of Rajasthan] 395

क्र. स.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
2	राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन [Freedom Movement in Rajasthan]	410
3	राजस्थान का एकीकरण [Integration of Rajasthan]	418
4	राजस्थान के महत्वपूर्ण व्यक्तित्व [Important Personalities of Rajasthan]	420
5	राजस्थानी भाषा, बोलियाँ एवं साहित्य [Language, Dialects and Literature of Rajasthan]	422
6	राजस्थान की संस्कृति एवं सामाजिक जीवन [Folk Culture and Social Life of Rajasthan]	429
7	राजस्थान की वेशभूषा एवं आभूषण [Costumes and Ornaments of Rajasthan]	434
8	राजस्थान में लोक संगीत एवं वाद्य यंत्र [Folk Music and Musical Instruments in Rajasthan]	438
9	राजस्थान के लोक देवता एवं देवियाँ [Lok-Devta and Lok-Deviyan of Rajasthan]	444
10	राजस्थान के मेले एवं त्योहार [Fairs and Festivals of Rajasthan]	449
11	राजस्थान की चित्रकला एवं लोक कलाएँ [Paintings and Folk-arts of Rajasthan]	455
12	राजस्थान की वास्तुकला एवं स्मारक [Architecture and Monuments of Rajasthan]	461
13	राजस्थान के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य [Folk Dance & Folk Drama of Rajasthan]	472
14	राजस्थान में पर्यटन स्थल [Tourist Places in Rajasthan]	476
15	ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान की हस्तियाँ [Celebrities of Rajasthan from Historical and Cultural Point of View]	486

Unit-III : भूगोल : राजस्थान 493–535

1	राजस्थान : स्थिति एवं विस्तार [Rajasthan : Location and Extent]	493
2	राजस्थान का भौतिक स्वरूप एवं भौतिक विभाजन [Physiography and Physical Division of Rajasthan]	497
3	राजस्थान में मृदा [Soil in Rajasthan]	500

क्र. स. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ संख्या

4 राजस्थान में प्राकृतिक वनस्पतियाँ एवं वन संरक्षण [Natural Vegetation and Forest Conservation in Rajasthan] 503
5 राजस्थान की जलवायु [Climate of Rajasthan] 511
6 जल संसाधन : अपवाह तंत्र एवं झीलें [Water Resource : Drainage System and Lakes] 514
7 राजस्थान की प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ [Major Irrigation Projects of Rajashtan] 522
8 जनसंख्या : आकार, वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात एवं साक्षरता [Population : Size, Growth, Distribution, Density, Sex Ratio & Literacy] 527
9 राजस्थान का परिवहन व राज्यमार्ग [Transport of Rajasthan and State Road] 531

Unit-III : भूगोल : राजस्थान 536–576

1 ग्रामीण विकास, राज्य के विकास में उद्योग की भूमिका [Role of Industry in Rural Development, State Development] 536
2 राज्य के विकास में कृषि क्षेत्र की भूमिका [Role of Agriculture Sector in the Development of the State] 548
3 राज्य के विकास में पशुपालन की भूमिका [Role of Animal Husbandary in the Development of the State] 555
4 राज्य के विकास में खनिज क्षेत्र की भूमिका [Role of Mineral Sector in the Development of the State] 560
5 राज्य की अर्थव्यवस्था : विशेषताएँ एवं समस्याएँ [State Economic Features and Problems] 565
6 राज्य की आय एवं बजट की अवधारणा [State Income and Concept of Budget] 569
7 राज्य की अर्थव्यवस्था के समक्ष चुनौतियाँ [Challenges Facing the State's Economy] 575

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

मॉडल पेपर

प्रहरी सीधी भर्ती परीक्षा 2025

कुल प्रश्न : 100 **समय : 120 मिनट** **कुल अंक : 400**

प्रत्येक प्रश्न के पाँच वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं, जिन्हें क्रमशः **[A], [B], [C], [D], [E]** *अंकित किया गया है।*

प्रत्येक प्रश्न चार अंक के होंगे। इस परीक्षा में प्रत्येक गलत प्रश्न पर 1 अंक काटा जायेगा।

कुल प्रश्न : 45 विवेचना एवं तार्किक योग्यता कुल अंक : 180

1. उस विकल्प का चयन करें, जो निम्नलिखित शृंखला में प्रश्नवाचक चिह्न (?) के स्थान पर आ सकता है।

A3A, Y8E, ?, O33M, G53Q

(A) S30I (B) U18I (C) T221 (D) U201 **[B]**

व्याख्या—दिया गया A3A, Y8E, ?, O33M, G53Q

$A \xrightarrow{-2} Y \xrightarrow{-4} \boxed{U} \xrightarrow{-6} O \xrightarrow{-8} G$

$3 \xrightarrow{+5} 8 \xrightarrow{+10} \boxed{18} \xrightarrow{+15} 33 \xrightarrow{+20} 53$

$A \xrightarrow{+4} E \xrightarrow{+4} \boxed{I} \xrightarrow{+4} M \xrightarrow{+4} 62$

2. सात न्यायाधीश A, B, C, D, E, F और G निर्णायक समिति की सात सीटों पर एक पंक्ति में बैठे हैं। C, A के बायीं ओर निकटतम सीट पर बैठा है और F के बायी ओर निकटतम सीट पर है। पंक्ति के बायी ओर की अंतिम सीट पर E बैठा है। C, G के दाई ओर एवं D के बाईं ओर बैठा है। बाईं ओर से पांचवें स्थान पर कौन बैठा है?

(A) A (B) C (C) B (D) D **[C]**

व्याख्या—प्रश्न के अनुसार क्रम व्यवस्था

बायाँ E G C A B D F दायाँ

बायीं ओर से पाँचवें स्थान पर B बैठा है।

अत: विकल्प (C) सही है।

3. नीचे दिये गये आरेख में यदि त्रिभुज स्वस्थ लोगो का, वर्ग बुजुर्ग लोगो का और वृत पुरूषों का प्रतिनिधित्व करता है, तो स्वस्थ पुरूष जो कि बुजुर्ग नहीं है की संख्या क्या है?

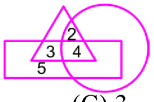

(A) 2 (B) 6 (C) 3 (D) 4 **[A]**

व्याख्या—आरेख के अनुसार:

1. त्रिभुज और वृत का वह हिस्सा जो वर्ग के बाहर है, वही स्वस्थ पुरुष होंगे जो बुजुर्ग नहीं हैं।
2. इस क्षेत्र में आने वाले संख्यात्मक मान को देखकर हम इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं।

यदि आरेख में यह संख्या 2 है, तो इसका अर्थ है कि 2 स्वस्थ पुरुष हैं जो बुजुर्ग नहीं हैं। इसलिए, सही उत्तर (A) 2 होगा।

4. एक प्रश्न दिया गया है जिसके बाद दो तर्क दिए गए है। निर्णय लें कि प्रश्न के संबंध में कौन से तर्क मजबूत हैं।

प्रश्न:

क्या कुत्ते निस्वार्थ प्यार करते हैं?

तर्क:

I. हाँ, कुत्ते बहुत वफादार और प्यारे होते हैं; घर पर पालतू कुत्ते होने पर बहुत दोस्ताना माहौल बना रहता है।

II. नहीं, यह सिर्फ एक मानवीय सोच है; अपितु, कुत्तों को मानवीय हस्तक्षेप रहित जीवन जीने की स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है।

(A) केवल तर्क I मजबूत है।

(B) केवल तर्क II मजबूत है।

(C) न तो तर्क I और न ही II मजबूत है।

(D) I और II दोनों तर्क मजबूत हैं। **[C]**

व्याख्या—दिए गए प्रश्न के संदर्भ में न तो तर्क I और न ही तर्क II मजबूत है। दोनों तर्कों से यह स्पष्ट नहीं होता कि कुत्ते निस्वार्थ प्यार करते हैं।

5. स्टेशन नियंत्रक ने गौरव से कहा, ''चिड़ावा के लिए के लिए बस प्रत्येक आधे घण्टे पर रवाना होती है। पिछली बस सिर्फ 5 मिनट पहले रवाना हुई है और अगली बस 2:20 बजे दोपहर में रवाना होगी।'' कितने बजे गौरव को यह सूचना स्टेशन नियंत्रक ने दी थी?

(A) 2:05 दोपहर (B) 1:55 दोपहर

(C) 1:45 दोपहर (D) 2:10 दोपहर **[B]**

व्याख्या—अगली बस का समय = 2:20 P.M.

∵ प्रत्येक 30 मिनट पर बस है = 0:30 मिनट

∴ पहली बस का समय

= 2:20 – 0:30 = 1:50 P.M.

∵ 5 मिनट पहले बस रवाना हुई 0:05 मिनट

∴ स्टेशन नियंत्रक द्वारा गौरव को दी गयी सूचना का समय

= 1:50 + 0:05 = 1:55 P.M.

6. दिए गए वाक्य पर ध्यान दें और निर्णय लें, कि उक्त वाक्य से निम्न कौन-सी कार्यवाही तार्किक रूप से अनुसरण करती है।

वाक्य :

बैंगलूर में कई निजी विद्यालय, सरकार द्वारा निर्धारित सीमाओं से अधिक शुल्क प्रभारित करते हैं।

कार्यवाही :

1. ऐसे विद्यालयों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जानी चाहिए।
2. ऐसे विद्यालयों को बंद कर देना चाहिए।

(A) न 1 और न ही 2 सही है। (B) केवल 2 सही है।

(C) 1 और 2 दोनों सही हैं। (D) केवल 1 सही है। **[D]**

व्याख्या—निजी विद्यालय सरकार द्वारा निर्धारित सीमाओं से अधिक शुल्क प्रभारित करते हैं। ऐसे विद्यालयों पर सख्त कार्यवाही अपेक्षित है। अत: विकल्प (D) सही है।

7. यदि अंजु किसी वर्ष 21 फरवरी को सोमवार के दिन पैदा हुयी हो तो बताइये 21 फरवरी 2005 को मंगलवार के दिन उसकी आयु क्या होगी?

(A) 7 वर्ष (B) 8 वर्ष (C) 9 वर्ष (D) 6 वर्ष **[D]**

व्याख्या—अंजु का जन्म—

21 फरवरी, 2005 → मंगलवार

भिनाय में कोड़ा मार खेली जाती है जिसमें लोग दो दलों में बंटकर एक दूसरे पर कोडों से प्रहार करते हैं।
मेवाड़ में उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर तथा दक्षिणी राजस्थान में आदिवासी लोगों में भगौरिया खेला जाता है। मेवाड़ के अनेक अंचलों में होली के मौके पर गैर नृत्य किया जाता है।
प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थली श्रीमहावीरजी में लट्ठमार होली में महिलाएं हाथों में लट्ठ लेकर पुरुषों पर प्रहार करती हैं।
शेखावाटी क्षेत्र में होली के अवसर पर गींदड़ नृत्य किया जाता है।
बाड़मेर की पत्थर होली में ईलोजी की बारात भी निकाली जाती है।
कोटा के आवां तथा सांगोद कस्बों का दो सौ वर्ष पुराना 'नहाण' आयोजन भी प्रसिद्ध है।

91. लोकदेवता मल्लीनाथजी का मन्दिर कहाँ है?
(A) तिलवाड़ा (बालोतरा) (B) नगला जहाज (भरतपुर)
(C) साथूँ गाँव (जालौर) (D) पाँचोटा गाँव (जालौर) **[A]**
व्याख्या—मल्लीनाथजी का जन्म मारवाड़ के रावल सलखा और जागीदे के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में 1358 ई. में हुआ।
लूनी नदी के तटवर्ती तिलवाड़ा (बालोतरा) गाँव में इनका मंदिर है। जहाँ प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल एकादशी तक विशाल पशु-मेला लगता है। जोधपुर के पश्चिमी परगने का नामकरण इन्हीं के नाम पर 'मालानी' किया गया था। इनकी आज भी मालानी (बाड़मेर) में अत्यधिक मान्यता है।

92. नानक भील व देवलाल गूजर का संबंध निम्नलिखित में से किससे था—
(A) बूँदी किसान आन्दोलन (B) बिजौलिया किसान आन्दोलन
(C) मेवाड़ भील आन्दोलन (D) बेगू किसान आन्दोलन **[A]**
व्याख्या—2 अप्रैल, 1923 ई. को डाबी गांव में किसानों की एक सभा हुई। सभा में एकत्रित किसानों की भीड़ पर पुलिस ने निष्ठुरता से लाठी प्रहार किया तथा गोलियां चलाई, जिसके परिणामस्वरूप नानक भील और देवलाल गुर्जर शहीद हुए।
बून्दी राज्य की इस घटना की सर्वत्र निन्दा की गई। बून्दी सरकार ने किसानों की कुछ शिकायतों का निवारण किया और लाग-बाग और बेगार में कुछ रियायतें दी। 1923 ई. के अन्त तक आन्दोलन प्रायः समाप्त हो गया।

93. पद्मिनी किस शासक की पत्नी थी?
(A) सांगा (B) रतनसिंह (C) राजसिंह (D) मानसिंह **[B]**
व्याख्या—रावल रतनसिंह को 1303 ई. में दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण का सामना करना पड़ा, जिसका कारण अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षा व चित्तौड़ की सैनिक एवं व्यापारिक उपयोगिता थी। 1540 ई. में मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा लिखित पद्मावत में अलाउद्दीन खिलजी के चित्तौड़ आक्रमण का कारण रावल रतनसिंह की पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करना बतलाया गया है। डॉ. दशरथ शर्मा इस मत को मान्यता प्रदान करते हैं।
अलाउद्दीन की सेना से लड़ते हुए रतनसिंह व उसके सेनापति गोरा और बादल वीरगति को प्राप्त हुए तथा रानी पद्मिनी ने 1600 महिलाओं के साथ जौहर कर लिया।
इस युद्ध में अलाउद्दीन खिलजी का समकालीन इतिहासकार अमीर खुसरो भी सम्मिलित हुआ था, उसने अपने ग्रंथ खजाईन-उल-फुतुह में इस आक्रमण का वर्णन किया है।

94. प्रसिद्ध पुष्कर मेला हिन्दू पंचांग के किस माह में लगता है?
(A) सावन (B) फाल्गुन (C) कार्तिक (D) चैत्र **[C]**
व्याख्या—अजमेर जिले का पुष्कर हिन्दुओं की आस्था का एक प्रमुख केन्द्र है। पूरे भारत में यही ब्रह्माजी का एकमात्र ऐसा मंदिर है। इसी मंदिर के पीछे की पहाड़ियों पर सावित्री माता का मंदिर भी है। पुष्कर में लगने वाला कार्तिक माह की पूर्णिमा का मेला अपनी विशालता के कारण अनुपम माना जाता है। यहाँ कार्तिक माह में दीपदान की परम्परा अत्यन्त महत्वपूर्ण और पौराणिक है। इसी समय पशु मेला भी लगता है।

95. राजस्थान में सीतामाता अभयारण्य प्रसिद्ध है—
(A) काले हिरण के लिए (B) उड़न गिलहरी के लिए
(C) सारस के लिए (D) शेर के लिए **[B]**
व्याख्या—सीतामाता अभयारण्य की स्थापना 2 जनवरी 1979 को प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ एवं सलूम्बर में 422.94 वर्ग किमी. में की गई। यहाँ उड़न गिलहरियाँ, उड़न छिपकलियाँ, बघेरा, सांभर, नीलगाय, पेंगोलिन, चीतल पाये जाते हैं। यह अभयारण्य सागवान के वनों के लिए जाना जाता है। इसे 'चीतल की मातृभूमि' कहा जाता है। यहाँ जाखम नदी पर जाखम बांध बना है।

96. निम्नांकित वन श्रेणियों में से राजस्थान में किसके अन्तर्गत सर्वाधिक प्रतिशत क्षेत्र आवृत है?
(A) निजी वन (B) अवर्गीकृत वन
(C) आरक्षित वन (D) संरक्षित वन **[D]**
व्याख्या—प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान के वनों को तीन भागों में विभक्त किया गया है—
1. **आरक्षित वन**—ये वन राजकीय सम्पत्ति हैं तथा इन क्षेत्रों में वन कटाई व पशु चराई पर पूर्णतः प्रतिबंध है। इस प्रकार के वन राज्य में 12178.03 वर्ग किमी. (36.99%) क्षेत्र पर विस्तृत हैं।
2. **संरक्षित वन**—इस प्रकार के वन भी सरकारी नियंत्रण में रहते हैं पर इन वनों में नियंत्रित वन कटाई व पशुचारण की अनुमति दी जाती है। इस प्रकार के वन राज्य में 18605.18 वर्ग किमी. (56.51%) क्षेत्र पर विस्तृत हैं।
3. **अवर्गीकृत वन**—इन वनों में लकड़ी काटने व पशुचारण पर किसी प्रकार का सरकारी नियंत्रण नहीं रहता है। राज्य में 2137.79 वर्ग किमी. (6.50%) क्षेत्र पर विस्तृत हैं।

97. मत्स्य संघ को वृहत् राजस्थान में किस समिति की सिफारिशों पर मिलाया गया?
(A) फजल अली समिति (B) व्यास समिति
(C) शंकर राव देव समिति (D) वर्मा समिति **[C]**
व्याख्या—अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली की रियासतों के एकीकरण द्वारा 18 मार्च, 1948 ई. को मत्स्य संघ बनाया गया था। अब जबकि जयपुर, जोधपुर और बीकानेर की रियासतें राजस्थान में मिल गई, तो मत्स्य संघ को अलग इकाई के रूप में रखने का कोई अर्थ नहीं था। इन रियासतों को भी वृहत् राजस्थान का हिस्सा बनाने के लिए 'डॉ. शंकरराव देव' समिति का गठन किया गया।
भारत सरकार ने समिति की सिफारिश को ध्यान में रखते हुए मत्स्य संघ की चारों इकाइयों को 15 मई, 1949 ई. को राजस्थान में मिला दिया। वहाँ के प्रधानमंत्री, शोभाराम को शास्त्री-मंत्रिमण्डल में शामिल कर लिया गया।

98. चम्पाकली आभूषण शरीर के किस अंग पर पहना जाता है—
(A) गर्दन (B) सिर (C) माथा (D) कान **[A]**
व्याख्या—गले में और वक्ष पर धारण किए जाने वाले आभूषणों में तुलसी, बजट्टी, जंतर, हालरो, हाँसली, तिमणियाँ, पोत, चन्द्रहार, कंठमाला, हमेल, हांकर, मांदल्या, चंपाकली, मटरमाला, हंसहार, सरी, कण्ठी आदि प्रमुख हैं।

99. निम्न में से किसे 'राजस्थान का मिनी खजुराहो' कहा गया है?
(A) एकलिंग मंदिर, उदयपुर (B) भंडदेवरा मंदिर, बारां
(C) किराडू, बाड़मेर (D) त्रिपुरा सुन्दरी, तलवाड़ा **[B]**
व्याख्या—भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर 10वीं शताब्दी का प्राचीन मंदिर माना जाता है। इसकी वास्तुकला की शैली खजुराहो शैली से मिलती-जुलती है, इसलिए इसे राजस्थान का 'मिनी खजुराहो' भी कहा जाता है।

100. जाफराबादी नस्ल जिससे सम्बन्धित है, वह है—
(A) गाय (B) भैंस (C) भेड़ (D) बकरी **[B]**
व्याख्या—जाफराबादी नस्ल की भैंस का मूल उत्पत्ति स्थल काठियावाड़ (गुजरात) है। यह राजस्थान के दक्षिणी भाग मुख्यतः डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, उदयपुर, सिरोही, जालौर एवं झालावाड़ जिलों में पायी जाती है। यह नस्ल अधिक दूध (20-22 लीटर प्रतिदिन) देती है। यह नस्ल सर्वश्रेष्ठ ताकतवर मादा जानवर का पुरस्कार जीत चुकी है।

1 कथन एवं पूर्वधारणाएँ [Statement and Assumptions]

❖ पूर्वधारणा (Assumption) का अर्थ है वह अनकही बात जो दिए गए कथन में अन्तर्निहित होती है और उस कथन से प्राय: अधिक मौलिक होती है। इस तरह के प्रश्नों में एक कथन दिया होता है और उससे सम्बन्धित दो या तीन पूर्वधारणाएँ दी होती हैं। अभ्यर्थी को कथन का विश्लेषण करके देखना होता है कि उसमें कौन-सी पूर्वधारणा अन्तर्निहित है।

अन्तर्निहित मान्यताओं को निर्धारित करने के नियम

❖ पूर्वधारणा कथन से पहले आती है जबकि निष्कर्ष कथन के बाद आता है। अर्थात् पूर्वधारणा पर कथन आधारित होता है जबकि निष्कर्ष कथन पर आधारित होता है।
❖ अन्तर्निहित बात सरल होनी चाहिए। किसी कथन में एक से अधिक बातें अन्तर्निहित हो सकती है।
❖ अन्तर्निहित बातों के निर्धारण में विशेषक शब्द सहायक होते हैं।
❖ पूर्वधारणा कथन से अधिक व्यापक नहीं होनी चाहिए।
❖ पूर्वधारणा और कथन एक दूसरे के सार्थक होने चाहिए।
❖ पूर्वधारणा और कथन के बीच कारण पूर्ण रूप से व्याप्त होने चाहिए।
❖ ऐसी पूर्वधारणा को जो किसी सुधार, लाभदायक परिणाम को प्रदर्शित करता हो वैध मानना चाहिए।
❖ पूर्वधारणा में कथन का यथार्थ भाव सन्निहित होना चाहिए।
❖ पूर्वधारणा में कथन की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।
❖ ऐसी पूर्वधारणा जो कि जनहित के लिए सूचित किए गए कथन के प्रभाव एवं सूचना देने वाले के कर्त्तव्यबोध को प्रदर्शित करता हो तथा जिसे न जारी करने पर हानिकारक प्रभाव की सम्भावना हो, वैध माना चाहिए।
❖ यदि कथन आधारित निष्कर्ष पूर्वधारणा के रूप में दिया जाता है तो वह पूर्वधारणा अमान्य होती है।

निर्देश—*निम्न उदाहरणों में, एक कथन के बाद दो पूर्वधारणाएँ दी गई हैं। कथन और पूर्वधारणाओं पर विचार कर के फैसला करना है, कि कौन-सी पूर्वधारणा कथन पर निर्भर करती है।*

(A) यदि कथन में पूर्वधारणा I अन्तर्निहित है
(B) यदि पूर्वधारणा II अन्तर्निहित है
(C) यदि पूर्वधारणा II व I दोनों ही अन्तर्निहित नहीं है
(D) यदि पूर्वधारणा I व II दोनों ही अन्तर्निहित हैं।

उदाहरण 1. कथन—कम होते जीवाश्म ईंधन भंडारों को बचाने के लिए सरकार ने सभी वाणिज्यिक वाहनों को बायो-ईंधन से चलाने का फैसला किया।

मान्यताएँ—

I. जीवाश्म ईंधन को वाहनों के लिए बदलना संभव है।

II. सभी वाणिज्यिक वाहनों को चलाने के लिए देश में बायो ईंधन का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन किया जा सकता है। **[B]**

हल: कथन में यह बात कही गई है कि कम होते जीवाश्म ईंधन भंडारों को बचाने के लिए सरकार ने सभी वाणिज्यिक वाहनों को बायो-ईंधन से चलाने का फैसला किया। अत: बायो ईंधन का समुचित मात्रा में उत्पादन किया जाय ताकि सभी वाणिज्यिक वाहनों को चलाने में बायो ईंधन की कमी न हो। चूँकि केवल पूर्वधारणा II अन्तर्निहित है, अत: उत्तर **(B)** है।

उदाहरण 2. कथन—यह वाँछनीय है कि बच्चे की उम्र जब लगभग 5 वर्ष हो जाए तो उसे स्कूल में प्रवेश दिला दिया जाए।

मान्यताएँ—

I. उस उम्र में बच्चे का समुचित विकास हो चुका होता है जिससे वह सीखना प्रारम्भ कर सकता है।

II. 6 साल की उम्र के बाद स्कूल बच्चे को प्रवेश नहीं देते हैं। **[A]**

हल: कथन में यह बात कही गई है कि बच्चे को 5 वर्ष की अवस्था में स्कूल में दाखिल करा दिया जाए। अत: इसमें यह अन्तर्निहित है कि उस समय तक बच्चे का इतना मानसिक विकास हो चुका होता है कि वह सीखना प्रारम्भ कर देता है। अत: पूर्वधारणा I, कथन में अन्तर्निहित है। कथन में 6 वर्ष की उम्र के बाद स्कूल बच्चे को दाखिल नहीं करते, इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा गया है। अत: पूर्वधारणा II कथन में निहित नहीं है और न उसका कथन से कोई सम्बन्ध है।
चूँकि केवल पूर्वधारणा I अन्तर्निहित है, अत: उत्तर **(A)** है।

उदाहरण 3. कथन—हाउसिंग सोसाइटी के अध्यक्ष एवं मंत्री ने सदस्यों से कहा है कि वे पानी का प्रयोग किफायत से करें जिससे सोसाइटी जल-कर में बचत कर सके।

मान्यताएँ—

I. अधिकांश सदस्य इस निर्देश का पालन करेंगे।

II. जहाँ कहीं सम्भव हो खर्चे में कमी की जानी चाहिए। **[B]**

हल: स्पष्ट है कि कथन में ऐसा कुछ नहीं है जिससे पता चले कि सदस्यगण उस निर्देश का पालन करेंगे। अत: पूर्वधारणा I, कथन में अन्तर्निहित नहीं है। कथन में पैसा बचाने की बात कही गई है। अत: पूर्वधारणा II अन्तर्निहित है। अत: उत्तर **(B)** है।

उदाहरण 4. कथन—सप्लायर्स का जितना रुपया हमारी तरफ निकलता है, उसे हमें तीन कार्य दिवस के अन्दर अवश्य चुका देना चाहिए।

मान्यताएँ—

I. हमारे खातों में सदैव इतना रुपया तो होगा ही जिससे उन बिलों का भुगतान किया जा सके।

4 कथन एवं कार्यवाहियाँ [Statement and Course of Action]

कार्यवाही क्या है?

- ❖ कार्यवाही एक उपाय अथवा प्रशासनिक निर्णय होता है जो कथन (अर्थात् कोई समस्या अथवा स्थिति) में दी गई सूचना के आधार पर समस्या, नीति आदि के संबंध में सुधार, अनुवर्तन अथवा आगे कार्यवाही के लिए अपनाया जाता है।
- ❖ कार्यवाही देश के कानून के विरुद्ध नहीं होनी चाहिए।
- ❖ कार्यवाही में व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या बाह्य कारक नहीं होना चाहिए।
- ❖ कार्यवाही का निर्णय लेते समय अन्य व्यक्तियों के सुझावों पर विचार करें लेकिन स्वयं अपना निर्णय लें।
- ❖ कार्यवाही का निर्णय देश तथा संबंधित संगठन के व्यापक हित में होना चाहिए।
- ❖ निर्णय लेते समय वर्तमान का भूतकाल के साथ तथा भविष्य का वर्तमान के साथ पारस्परिक संबंध नहीं बनाना चाहिए।
- ❖ इस अध्याय के अंतर्गत कई जटिल आंकड़ों एवं व्यवस्थाओं के समुच्चय या सूचना/निर्देश दिए जाते हैं जो काफी जटिल पैराग्राफ के रूप में होते हैं जिसे पढ़कर दिए गए प्रश्न/प्रश्नों पर अपना निर्णय देना होता है।

निर्णयन हेतु कार्यविधि

- ❖ दिए गए पैराग्राफ को ध्यानपूर्वक पढ़ें एवं उसका विश्लेषण करें।
- ❖ दिए गए आंकड़े व सूचनाओं को क्रमबद्ध या सारणीबद्ध करें।
- ❖ आंकड़ों व सूचनाओं को सारणीबद्ध करने के बाद उन्हें अंतर्सम्बन्धित करके समस्या का समाधान करें।

कार्यवाही के कुछ विशिष्ट नियम

- ❖ सर्वप्रथम समस्या का विश्लेषण इस दृष्टिकोण से करें जिससे यह पता लग सके कि समस्या जटिल है या साधारण।
- ❖ यदि समस्या जटिल हो, तो ऐसी कार्यवाही का चयन करें जो त्वरित एवं ठोस कार्यवाही को प्रदर्शित करती हो।
- ❖ यदि समस्या साधारण हो तो ऐसी कार्यवाही का चयन करें जो कि सुधार को प्रदर्शित करती है।
- ❖ यदि समस्या सर्वमान्य तथ्यों पर आधारित हो, तो ऐसी कार्यवाही का चयन करें जो सर्वमान्य हो।
- ❖ यदि समस्या पूर्व की किसी अन्य समस्या से मिलती-जुलती प्रतीत हो, तो ऐसी समस्या को पूर्व के अनुभव के आधार पर हल करें। यानी कि ऐसी कार्यवाही का चयन करें जो पूर्व के अनुभव पर आधारित हो।
- ❖ यदि समस्या सामान्य ज्ञान पर आधारित हो, तो ऐसी ही कार्यवाही का चयन करें जो कि सामान्य ज्ञान के आधार पर समस्या के समाधान को प्रदर्शित करती हो।
- ❖ यदि समस्या का समाधान तार्किक दृष्टिकोण से कल्पना के आधार पर संभव हो, तो ऐसी कार्यवाही का चयन करें जो कि यथार्थ कल्पना पर आधारित हो।
- ❖ ऐसी ही कार्यवाही का चयन करें जो कि समस्या को बिल्कुल हल करती प्रतीत हो या समस्या को कम करती हो या उसमें सुधार को प्रदर्शित करती हो।
- ❖ इस प्रकार के प्रश्नों में एक कथन दिया रहता है तथा इसके साथ दो या दो से अधिक कार्यवाहियाँ दी रहती हैं। कोई कार्यवाही एक कदम या ऐसा प्रशासनिक निर्णय होता है जो किसी समस्या या नीति के बारे में उसे कार्यान्वित करने या उससे सम्बन्धित अनुवर्ती कार्यवाही करने हेतु लिया जाता है। आपको कथन में कहा गया सब कुछ सत्य मानना है तथा फिर तय करना है कि सुझायी गई कार्यवाहियों में से कौन सी कार्यवाही आगे के लिए तर्कसंगत प्रतीत होती है।
- ❖ कथन एवं कार्यवाहियों पर आधारित प्रश्न दो प्रकार के होते हैं
  (i) एक कथन एवं दो कार्यवाहियाँ
  (ii) एक कथन एवं दो से अधिक कार्यवाहियाँ
- ❖ इस प्रकार के प्रश्नों में कोई स्थिति अथवा समस्या दी जाती है। ऐसी कोई भी घटना या स्थिति (Situation) जो हमारे सामान्य जन-जीवन को अंशतः या पूर्णतः बाधित कर देती है या उसमें गतिरोध उत्पन्न करती हो, ऐसी घटना या स्थिति को समस्या कहते हैं।

  उदाहरणार्थ : उग्रवाद, डकैती, ट्रेन दुर्घटना, कदाचार, शोषण, लूटपाट, दहेज-प्रथा, साम्प्रदायिक दंगा, छुआ-छूत, जाति-प्रथा, ट्रेन सेवा में व्यवधान, विद्युत सेवा में व्यवधान, अशिक्षा, बालश्रम, जनसंख्या वृद्धि, बाल अपराध, भूकम्प, प्रदूषण, बाढ़, बेरोजगारी, कुपोषण, राजनीतिक संकट, शोर, अनुशासनहीनता, युद्ध, महामारी, सूखा पड़ना, हड़ताल, अश्लील विज्ञापन, अश्लील साहित्य आदि।
- ❖ उपर्युक्त समस्याओं के दृष्टिकोण से समस्या को दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है
  (i) जटिल समस्या ऐसी समस्या जिसके लिए योजनाबद्ध त्वरित एवं ठोस कार्यवाही करने की जरूरत होती है, ऐसी समस्या को जटिल समस्या कहते हैं जैसे उग्रवाद, ट्रेन दुर्घटना, बाढ़, महामारी इत्यादि।
  (ii) साधारण समस्या ऐसी समस्या जिसके समाधान के लिए कोई योजनाबद्ध त्वरित एवं ठोस कार्यवाही का नहीं बल्कि सिर्फ थोड़े सुधार की आवश्यकता होती है, ऐसी समस्या को साधारण समस्या कहते हैं, जैसे बाल अपराध, शोर, अनुशासनहीनता इत्यादि।

निर्देश : *निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न में पहले तो एक कथन दिया गया है फिर उसके बाद (I) और (II) क्रमांकित दो कार्यवाहियाँ दी गई है। आपको कथन में कहा गया सब कुछ सत्य मानना है या फिर तय करना है कि सुझायी गई दो कार्यवाहियों में से कौन सी कार्यवाही आगे के लिए तर्कसंगत प्रतीत होती है।*

6 विषम ज्ञात करना [Finding the Odd]

❖ **वर्गीकरण** का शाब्दिक अर्थ **'वर्ग का निर्धारण'** होता है। इसके अन्तर्गत किसी शब्द/संख्या/अक्षर/आकृति को उनके सामान्य गुण-धर्म, आकार, प्रकार, रंग-रूप, लक्षण एवं अन्य गुणों के आधार पर किसी समूह से वर्गीकृत किया जाता है।

❖ वर्गीकरण को **'विजातीय या असंगत परीक्षण'** या **'बेमेल परीक्षण'** भी कहा जाता है, क्योंकि इस प्रकार के प्रश्नों में सामान्यतया चार या पाँच शब्दों के समूह दिये जाते हैं, जिनमें से तीन या चार शब्द किसी-न-किसी प्रकार से आपस में सम्बन्धित होते हैं, जबकि शेष एक शब्द अन्य (दिये गये) शब्दों से भिन्न होता है।

❖ इस प्रकार उक्त तीन या चार शब्द एक समूह, वर्ग या जाति के होते हैं, जबकि शेष एक शब्द दूसरे अर्थात् भिन्न समूह, वर्ग या जाति का होता है। इसी एक भिन्न वर्ग, समूह या जाति वाले शब्द यानि 'असंगत', 'बेमेल' या 'विजातीय' शब्द को चुनने के लिए आपसे कहा जाता है।

TYPE 1

हिन्दी शब्दों का वर्गीकरण
(Classification of Hindi Words)

❖ शब्दों के वर्गीकरण के कुछ नमूनार्थ प्रकारों को भलीभांति समझ लेना काफी लाभप्रद होगा।

शरीर के अंग

✧ **कमर से ऊपर का भाग**—सिर, ललाट, चेहरा, आँख, नाक, मुँह, कान, गर्दन, कंधा, जीभ, बाँह, हाथ, छाती (सीना), पेट, पीठ आदि।

✧ **कमर से नीचे का भाग**—पाँव, तलवा, एड़ी, टखना, टाँग, घुटना, जांघ, कमर आदि।

✧ **भीतरी भाग**—हृदय, फेफड़ा, मस्तिष्क, गुर्दा, प्लीहा, अग्नाशय, बड़ी आँत, छोटी आँत, गर्भाशय आदि।

फसलों के नाम

✧ **रबी फसल**—गेहूँ, जौ, चना, तिलहन, (राई, सरसों, सूरजमुखी, सोयाबीन) आदि।

✧ **खरीफ फसल**—चावल, मक्का, ज्वार, बाजरा, गन्ना, कपास आदि।

✧ **जायद फसल**—ककड़ी, खीरा, तरबूज, खरबूजा आदि।

✧ **नकदी फसल**—जूट, तम्बाकू, गन्ना, कपास आदि।

✧ **खाद्यान्न**—चावल, दालें, गेहूँ, जौ, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि।

फलों के नाम

✧ **रसदार फल**—अनार, नारंगी, सेब, अंगूर, पपीता, आम, नींबू, मौसमी, नाशपाती, तरबूज, खरबूजा, सपाटू (चीकू), अनन्नास, बेर, चेरी, नारियल, जामुन, अमरूद आदि।

✧ **सूखे फल (मेवे)**—बादाम, छुहारा, किशमिश, काजू, अखरोट, मुनक्का, गरी, सुपाड़ी आदि।

साग-सब्जियों के नाम

✧ **शाक (साग) के नाम**—हरी चौलाई, लाल चौलाई, बथुआ, चना, पालक, नोनी, पुरु आदि।

✧ **हरी सब्जियों के नाम**—फूलगोभी, बंदगोभी या पत्तागोभी, परवल, कद्दू (लौकी), मटर, बैंगन, करैला आदि।

✧ **रेशेदार सब्जियों के नाम**—भिण्डी, सेम, सहजन, बोरो, बीन, शलजम आदि।

✧ **अन्य सब्जियों के नाम**—आलू, कटहल, कोहरा, कंदा।

✧ **सलाद व मसाला**—खीरा, ककड़ी, गाजर, टमाटर, अदरक, प्याज, लहसुन, हरी मिर्च, लाल मिर्च, काली मिर्च, शिमला मिर्च, धनिया, धनिया पत्ता, हल्दी आदि।

स्थानों के नाम

✧ **महाद्वीपों के नाम**—एशिया, अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका आदि।

✧ **देश की राजधानियों के नाम**—लंदन (इंग्लैंड), वाशिंगटन डी.सी. (संयुक्त राज्य अमेरिका या यू.एस.ए.), नई दिल्ली (भारत), इस्लामाबाद (पाकिस्तान), मॉस्को (रूस), काठमांडू (नेपाल), माले (मालदीव), कोलम्बो (श्रीलंका), ढाका (बांग्लादेश), जकार्ता (इंडोनेशिया), वियना (आस्ट्रिया), बर्लिन (जर्मनी), रोम (इटली), टोक्यो (जापान) आदि।

✧ **राज्य की राजधानियों के नाम**—लखनऊ (उत्तर प्रदेश), राँची (झारखंड), पटना (बिहार), भोपाल (मध्यप्रदेश), शिमला (हिमाचल प्रदेश), चैन्नई (तमिलनाडु), बैंगलौर (कर्नाटक), भुवनेश्वर (उड़ीसा), चंडीगढ़ (पंजाब और हरियाणा), जयपुर (राजस्थान), कोलकाता (पश्चिम बंगाल), मुम्बई (महाराष्ट्र) आदि।

✧ **देश-विदेश के प्रमुख शहरों के नाम**—अहमदाबाद (गुजरात, भारत), पुणे (महाराष्ट्र, भारत), आगरा (उत्तर प्रदेश, भारत), न्यूयार्क (यू.एस.एस.), सिडनी (ऑस्ट्रेलिया), करांची (पाकिस्तान), चटगाँव (बांग्लादेश), बड़ौदा (गुजरात, भारत), मुजफ्फरपुर (बिहार, भारत), उदयपुर (राजस्थान, भारत), कटक (उड़ीसा, भारत), सेंट पीट्सबर्ग (रूस), वाराणसी (उत्तर प्रदेश, भारत), गुडगाँव (हरियाणा, भारत), ग्वालियर (मध्य प्रदेश) आदि।

✧ **पर्वतीय या पर्यटन स्थलों के नाम**—मसूरी (उत्तराँचल), नैनीताल (उत्तराँचल), मनाली (हिमाचल प्रदेश), उदयपुर (राजस्थान), दार्जिलिंग (पश्चिम बँगाल), हम्पी (कर्नाटक), खजुराहो (मध्य प्रदेश), कोणार्क (उड़ीसा), राजगीर (बिहार) आदि।

❖ इसी प्रकार वस्त्र-परिधान, पशु-पक्षी, ग्रह-नक्षत्र, जीव-जन्तु, प्राकृतिक उत्पाद, खेल-खिलाड़ी, रक्त-सम्बन्ध, फूल-पौधे आदि से सम्बन्धित

9 वेन आरेख [Venn Diagram]

❖ **वेन आरेख (Venn Diagram) :** स्विस गणितज्ञ **यूलर** (Eular) ने समुच्चयों को ज्यामितीय आकृतियों द्वारा व्यक्त करने की विधि को प्रारम्भ किया।

❖ ब्रिटिश गणितज्ञ, **जॉन वेन** (John Venn) ने **यूलर** की विधि का और विकास किया, इसलिए इनके सम्मान में समुच्चयों को व्यक्त करने वाली ज्यामितीय आकृतियों को **वेन आरेख** कहा जाता है।

जॉन वेन

❖ दिए हुए कथनों की सत्यता एवं इनके द्वारा निकाले गए निष्कर्षों की वैधता को सिद्ध करने के लिए भी वेन आरेखों का उपयोग किया जा सकता है।

❖ वेन आरेख में प्रयोग किए जाने वाले वृत्त, आयत, त्रिभुज आदि के आकार का दिए हुए कथनों से कोई सम्बन्ध नहीं है, अर्थात् ये आरेख किसी निश्चित पैमाने पर नहीं खींचे जाते।

❖ वेन आरेख के प्रश्नों में दो या दो से अधिक तथ्य दिये जाते हैं तथा इनके बाद आरेखों की विभिन्न व्यवस्थाएँ दी जाती हैं।

❖ **समुच्चय, अवयव तथा वेन आरेख**—समुच्चय का तात्पर्य 'समूह' से है। समुच्चय कई अवयवों से मिलकर बना होता है। इसे वेन आरेख के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है।

❖ वेन आरेख हेतु प्रत्येक आकृति बन्द मुँह की होती है तथा इसके अन्दर का क्षेत्र प्रतीकात्मक रूप से समुच्चय के अवयवों की स्थिति दर्शाता है। आकृतियों के आधार पर संरचना का समुच्चयों के आधार तथा गुण से कोई सापेक्षिक सम्बन्ध नहीं होता है।

❖ **समुच्चय का आपस में सम्बन्ध**—वेन आरेख के अन्तर्गत प्रश्नों में वास्तविक तथ्य महत्वपूर्ण होते हैं। सभी समुच्चय आपस में वास्तविक सम्बन्धों के आधार पर नहीं वरन् वास्तविक तथ्यों के आधार पर सम्बद्ध होते हैं। कुछ समुच्चयों के लिए वेन आरेख निम्न प्रकार हैं—

✧ **अध्यापक, वकील, डॉक्टर**

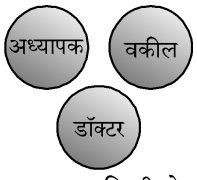

सम्बन्ध—किसी के मध्य भी कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं है। अत: इनके वेन आरेख (वृत्त) अलग-अलग हैं।

✧ **पक्षी, तोता, हाथी**

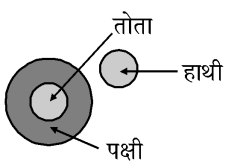

सम्बन्ध—तोता एक पक्षी है, जबकि हाथी एक जंगली जानवर है। अत: बड़ा वृत्त पक्षी-समूह को दर्शाता है। उसके अन्दर छोटा वृत्त तोता को दर्शाता है, क्योंकि तोता भी एक पक्षी है। उधर, हाथी पक्षी नहीं है, इसलिए उसका वृत्त बिल्कुल अलग है।

✧ **हाथी, जंगली पशु, शेर**

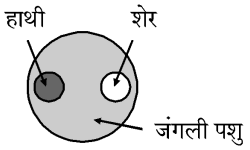

सम्बन्ध—यहाँ हाथी और शेर भिन्न-भिन्न प्रकार के पशु हैं, लेकिन दोनों जंगली पशुओं के वर्ग में आते हैं। अत: इनके वृत्तों को भिन्न-भिन्न परन्तु बड़े वृत्त (जंगली पशु) के अंदर दिखाया गया है।

✧ **संसद, मन्त्रिपरिषद्, प्रधानमंत्री।**

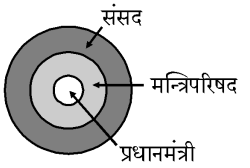

सम्बन्ध—किसी भी संसद में एक मन्त्रिपरिषद् होती है तथा प्रधानमंत्री उस मंत्रिपरिषद् का ही अंग होता है। अत: बड़े वृत्त (संसद) के अन्दर एक छोटा वृत्त (मन्त्रिपरिषद्) और उसके अन्दर एक और छोटा वृत्त (प्रधानमन्त्री) दर्शाता है कि प्रधानमंत्री मन्त्रिपरिषद् का सदस्य है और वह संसद के अन्तर्गत है।

✧ **महिला, माता, शिक्षिका**

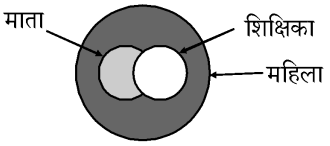

सम्बन्ध—सभी माताएँ तथा सभी शिक्षिकाएँ महिला हैं, कुछ माताएँ शिक्षिका हो सकती हैं। कुछ महिलाएँ शिक्षिका व माता दोनों हो सकती हैं।

✧ **सागर, द्वीप, पर्वत**

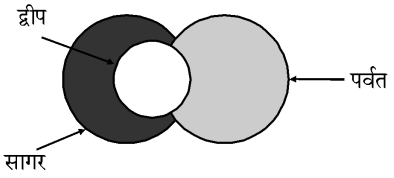

सम्बन्ध—द्वीप सागर का एक भाग होता है जबकि कुछ पर्वत द्वीप पर भी हो सकते हैं।

14 लुप्त संख्या ज्ञात करना [Finding the Missing Number]

❖ इस अध्याय के अन्तर्गत प्रश्नों में कुछ अंकों या संख्याओं को किसी विशेष तार्किक एवं गणितीय गणना के आधार पर किसी चित्र, आरेख, ज्यामितीय आकृति एवं सारणी में संस्थापित किया जाता है। विभिन्न समूहों में विभाजित संख्याओं में से कोई संख्या लुप्त/गायब (Missing) रहती है, जिसे ज्ञात कर सही उत्तर देना होता है।

❖ इसके अन्तर्गत साधारणतया बौद्धिक गणित पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्नों में एक या एक से अधिक आकृतियों में कुछ संख्याएँ दी जाती है। दी गई आकृतियों में किसी एक स्थान पर प्रश्नवाचक चिह्न (?) दिया हुआ रहता है। आपको प्रश्नवाचक चिह्न के स्थान पर आने वाली संख्या, दिए गए विकल्पों में से, ज्ञात करनी होती है।

TYPE 1

संख्याओं के योग पर आधारित

❖ इस प्रकार के प्रश्नों में दिए गए आरेख में कुछ संख्याएँ दी गई होती है, जो आपस में जोड़ के सम्बन्ध द्वारा जुड़ी होती है। दी गई संख्यायें आरेख के अन्दर या बाहर विशेष स्थानों पर लिखी जाती है। किसी एक स्थान पर प्रश्नवाचक चिह्न (?) दिया जाता है। आपको प्रश्नों में दिए गए विकल्पों में से किसी एक को चुनकर उत्तर देना होता है।

उदाहरण 1. आकृति में लुप्त संख्या ज्ञात करें?

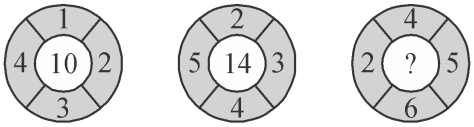

(A) 15 (B) 17 (C) 19 (D) 22 **[B]**

हल: दी गई पहली आकृति में, 1 + 2 + 3 + 4 = 10

दी गई दूसरी आकृति में, 2 + 3 + 4 + 5 = 14

∴ दी गई तीसरी आकृति में, 4 + 5 + 6 + 2 = 17

TYPE 2

संख्याओं के गुणज पर आधारित

❖ इस प्रकार के प्रश्नों में दिए गए आरेख में कुछ संख्याएँ दी गई होती है, जो आपस में गुणा के सम्बन्धों द्वारा जुड़ी होती है। प्रश्नवाचक चिह्न (?) के स्थान के लिए उपयुक्त संख्या को दिए गए विकल्पों में से चयन करना होता है।

उदाहरण 1. निम्न तालिका में खाली स्थान पर कौन-सी संख्या होगी?

17	102	12
15	?	10

(A) 50 (B) 65 (C) 75 (D) 85 **[C]**

हल: तालिका में दी गई संख्याओं का क्रम निम्न प्रकार

प्रथम संख्या को तीसरी संख्या के आधे से गुणा करने पर मध्य की संख्या प्राप्त होती है अर्थात

$$17 \times 6 = 102 \qquad \left[\because \frac{12}{2} = 6\right]$$

इसी प्रकार $15 \times 5 = 75$ होगी। $\left[\because \frac{10}{2} = 5\right]$

TYPE 3

संख्याओं के वर्ग पर आधारित

❖ इस प्रकार के अन्तर्गत आने वाले प्रश्न आकृति में दी गई संख्याओं और उनके वर्ग के आपसी सम्बन्ध पर आधारित होते हैं। प्रश्नवाचक चिह्न (?) के स्थान पर आने वाली संख्या आपको दिए गए विकल्पों में से ज्ञात करनी होती है।

उदाहरण 1. प्रश्नवाचक चिह्न (?) के स्थान पर कौन-सी संख्या आएगी?

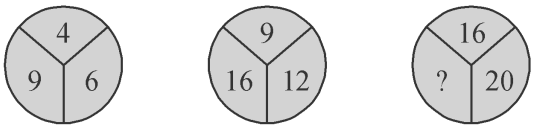

(A) 22 (B) 23 (C) 25 (D) 32 **[C]**

हल: प्रत्येक गोले में तीन में से दो अंक ऐसे हैं जो किसी अंक के वर्ग हैं तथा तीसरा अंक दोनों अंकों के वर्गमूल का गुणा है।

प्रथम वृत्त से— $\sqrt{9} \times \sqrt{4} \Rightarrow 3 \times 2 = 6$

दूसरे वृत्त से— $\sqrt{9} \times \sqrt{16} \Rightarrow 3 \times 4 = 12$

तीसरे वृत्त से— $\sqrt{16} \times \sqrt{?} \Rightarrow 20$

$$4 \times \sqrt{?} = 20$$

$$\sqrt{?} = \frac{20}{4} = 5$$

$$? = 5^2 \text{ या } ? = 25$$

TYPE 4

संख्याओं के घन पर आधारित

❖ इस प्रकार के अन्तर्गत आने वाले प्रश्न आकृति में दी गई संख्याओं और उनके घन के आपसी सम्बन्ध पर आधारित होते हैं। प्रश्नवाचक चिह्न (?) के स्थान पर आने वाली संख्या आपको दिए गए विकल्पों में से ज्ञात करनी होती है।

उदाहरण 2. प्रश्नवाचक चिह्न (?) के स्थान पर कौन-सी संख्या आएगी?

15 दर्पण एवं जल प्रतिबिम्ब [Mirror and Water Images]

दर्पण प्रतिबिम्ब [Mirror Images]

❖ किसी वस्तु, संख्या, अक्षर, शब्द आदि का जो काल्पनिक प्रतिबिम्ब दर्पण में दिखाई देता है, दर्पण प्रतिबिम्ब कहलाता है। दर्पण को दो प्रकार की स्थितियों में रखा जा सकता है—
(i) लम्बवत् स्थिति में दर्पण (Vertical Position of Mirror)
(ii) क्षैतिज स्थिति में दर्पण (Horizontal Position of Mirror)

❖ **लम्बवत् स्थिति में दर्पण (Vertical Position of Mirror) :** जब किसी दर्पण को क्षैतिज तल के सापेक्ष में 90° के कोण पर खड़ी अवस्था में रखा जाता है, तो दर्पण की ऐसी स्थिति लम्बवत् स्थिति कहलाती है।

❖ इस प्रकार के दर्पण में सामने रखी गई वस्तु, संख्या, अक्षर, शब्द आदि की प्रतिबिम्ब **पलटी हुई प्रतीत** होती है अर्थात् मूल प्रतिरूप में वस्तु, संख्या, अक्षर, शब्द आदि का जो भाग बायीं ओर होता है, वह प्रतिबिम्ब में दायी ओर एवं जो भाग दायीं ओर होता है, वह प्रतिबिम्ब में बायीं ओर स्थानान्तरित प्रतीत होता है।

मूल प्रतिरूप   काल्पनिक प्रतिरूप

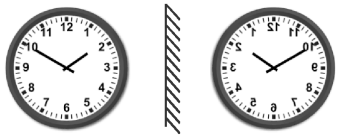

❖ उपरोक्त दोनों आकृतियों से स्पष्ट है कि लम्बवत् दर्पण में मूल प्रतिरूप बायां भाग दायीं ओर एवं दायां भाग बांयी ओर स्थानान्तरित प्रतीत होता है।

❖ **क्षैतिज स्थिति में दर्पण (Horizontal Position of Mirror) :** जब किसी दर्पण को क्षैतिज तल के समानान्तर पड़ी अवस्था में रखा जाता है, तो दर्पण की ऐसी स्थिति क्षैतिज स्थिति कहलाती है।

❖ इस प्रकार के दर्पण में सामने रखी गई वस्तु, संख्या, अक्षर, शब्द आदि का प्रतिबिम्ब **उलटा हुआ प्रतीत** होता है अर्थात् मूल प्रतिरूप में वस्तु, संख्या, अक्षर, शब्द आदि का जो भाग ऊपर होता है वह प्रतिबिम्ब में नीचे तथा जो भाग नीचे होता है वह प्रतिबिम्ब में ऊपर प्रतीत होता है।

मूल प्रतिरूप

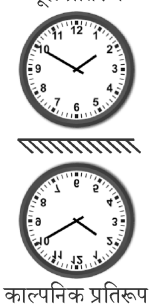

काल्पनिक प्रतिरूप

❖ उपरोक्त दोनों आकृतियों से स्पष्ट है कि क्षैतिज दर्पण में मूल प्रतिरूप का ऊपर का भाग नीचे की ओर एवं नीचे का भाग ऊपर की ओर स्थानान्तरित प्रतीत होता है।

रोमन अंकों के दर्पण प्रतिबिम्ब

मूल अंक	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
दर्पण प्रतिबिम्ब	0	⇂	Ƨ	Ɛ	ᔭ	ꙅ	მ	⅂	8	ɘ

TYPE 1

अंग्रेजी के अंकों/अक्षरों/शब्दों के दर्पण प्रतिबिम्ब

उदाहरण 1. DL3N469F की दर्पण छवि क्या होगी?
(A) ꟻ964ИƐ⅃ᗡ (उल्टा)   (B) F469N3DL
(C) F964N3LD   (D) ꟻ964ИƐ⅃ᗡ   **[D]**

हल: विकल्पों के अवलोकन से स्पष्ट है कि DL3N469F की दर्पण आकृति विकल्प (D) की आकृति होगी।

TYPE 2

आकृति एवं वस्तुओं के दर्पण प्रतिबिम्ब

उदाहरण 1. यदि दर्पण को AB रेखा पर रखा जाता है, तो दी गई आकृति की सही दर्पण छवि कौनसी होगी—

(A)   (B)

(C)   (D)   **[C]**

व्याख्या—दी गई प्रश्न आकृति का दर्पण प्रतिबिम्ब विकल्प आकृति (C) के समान होगा।

उदाहरण 2. कौनसा विकल्प बाएँ दी गई आकृति का दर्पण प्रतिबिम्ब दर्शाता है—

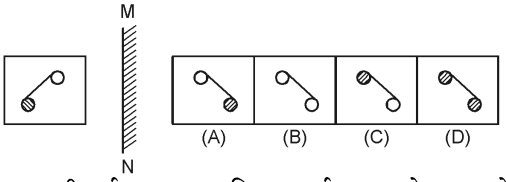

(A)

हल: दी गई प्रश्न आकृति का दर्पण अवलोकन करने पर प्रतिबिम्ब विकल्प A के सदृश्य प्राप्त होगा।

19 बैठक व्यवस्थीकरण [Seating Arrangements]

❖ व्यक्ति या वस्तु को अन्य व्यक्ति या वस्तु से उनके स्थान/स्थिति के आधार पर सापेक्षिक तुलना करते हुए, उस व्यक्ति या वस्तु का स्थान/स्थिति को निरूपित करने की प्रक्रिया को 'बैठक व्यवस्थीकरण' कहते हैं।

❖ प्रतियोगी परीक्षाओं में 'बैठक व्यवस्थीकरण' से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनमें व्यक्तियों के बैठने के क्रम, बैठने की दिशा, बैठने की व्यवस्था पर आधारित होते हैं।

पंक्ति में किसी व्यक्ति की स्थिति बाएँ अथवा दाएँ से ज्ञात करना

❖ एक रेखा या पंक्ति में कुछ व्यक्ति या वस्तु होते हैं जिनका स्थान या क्रम निर्धारण दी गई सूचनाओं के आधार पर व्यक्त किया जाता है।

❖ इस पंक्ति या कतार में बैठे व्यक्तियों या रखी वस्तुओं का बायाँ या दायाँ वही होगा जो हमारा होता है।

❖ जब दो पंक्तियाँ या कतार आमने-सामने हों और वे एक-दूसरे की ओर मुँह किये हो तो पहली पंक्ति के लिए जिस ओर बायाँ होगा वो दूसरी पंक्ति के लिए दायाँ होगा तथा पहली पंक्ति का जिस ओर दायाँ होगा दूसरी पंक्ति का वो बायाँ होगा।

वृत्तीय/वर्गाकार क्रम व्यवस्था

❖ इसके अन्तर्गत आने वाले प्रश्नों में कुछ व्यक्तियों या वस्तुओं के समूह वृत्ताकार घेरे में बैठे होते हैं। परीक्षार्थियों से किसी एक व्यक्ति या वस्तु का स्थान किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु के सापेक्ष ज्ञात करनी होती है। वृत्तीय क्रम व्यवस्था के अन्तर्गत सामान्यतः दो प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं—

(i) जब मुँह केन्द्र की ओर हो (ii) जब मुँह केन्द्र के बाहर हो

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. दी गई जानकारी को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए प्रश्न का उत्तर दीजिए।

7 लड़के P, Q, R, S, T, U और V पूर्व की ओर मुंह करके एक कॉलम में खड़े हैं (आवश्यक नहीं कि उसी क्रम में)।

(i) S और U, और V और S के बीच व्यक्तियों की संख्या बराबर है।

(ii) V, R के करीब नहीं खड़ा है।

(iii) P जो एक छोर से पांचवें स्थान पर है, वो R के 3 स्थान पीछे है।

(iv) Q और P एक दूसरे के निकटवर्ती हैं। T और S भी।

कॉलम में आखिर में कौन है?

(A) T (B) S (C) P (D) V **[D]**

व्याख्या—

U R T S P Q V

बैठक व्यवस्था चित्रानुसार होगी।

कॉलम के आखिर में V बैठा है।

2. पांच दोस्त - राम, रहीम, राहुल, रॉकी और राज एक दीवार पर टेक लेकर बैठे हैं। ये सभी उत्तर की ओर मुंह किए हुए हैं। राम, राज के दाएं से दूसरे स्थान पर बैठा है, जो किसी भी सिरे पर नहीं बैठा है। राम और रहीम दोनों सिरों पर बैठे हैं। राहुल, राम के बगल में नहीं बैठा है। रॉकी के बाई ओर तीसरे स्थान पर कौन बैठा है?

(A) राहुल (B) रहीम (C) राम (D) राज **[B]**

व्याख्या—बैठक व्यवस्था चित्रानुसार होगी—

रहीम राहुल राज रॉकी राम

स्पष्ट है रॉकी के बाएँ तीसरे स्थान पर रहीम है।

3. दी गई जानकारी को ध्यान से पढ़ें और उसके बाद दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें।

छः मित्र अबी, जूनो, कथी, निशा, मिनी और गुना केंद्र की ओर मुंह करके एक मेज के गिर्द बैठ कर ताश खेल रहें हैं।

(i) गुना, मिनी के दायें तीसरा बैठा है।

(ii) कथी, निशा के बाएं तीसरा बैठा है।

(iii) निशा गुना के ठीक दायें और कथी के विपरीत बैठी है।

(iv) अबी, गुना और कथी के बीच में नहीं बैठा है।

गुना के दायें दूसरा कौन बैठा है?

(A) निशा और कथी पडौसी हैं

(B) अबी कथी के दायें दूसरा बैठा है

(C) मिनी और जूनो पडौसी हैं

(D) जूनो गुना और कथी के ठीक बीच में बैठा है **[D]**

व्याख्या—बैठक व्यवस्था चित्रानुसार होगी—

कथी जूनो मिनी गुना अबी निशा

∴ व्यवस्था के संदर्भ में विकल्प (D) सत्य है।

4. सात मकान A, B, C, D, E, F तथा H एक पंक्ति में उत्तरमुखी बनाए गए हैं (जरूरी नहीं कि इसी क्रम में हों) I D दाएं सिरे पर बनाया गया है। A तथा F, B के ठीक बगल में बनाए गए हैं। E, A के ठीक बगल में बनाया गया है। H, B के दाई ओर चौथे स्थान पर है। विकल्पों में दिए गए तीन संयोजन उपरोक्त व्यवस्था में घरों की

यदि इस पारदर्शी शीट को बिंदीदार रेखा पर मोड़ा जाता है तो ऐसा करने से बना चित्र कौनसा होगा?

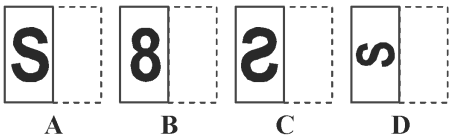

(A) A (B) D (C) B (D) C **[C]**

व्याख्या—पारदर्शी सीट को बिंदीदार रेखा पर मोड़ने पर वह उत्तर चित्र B जैसा दिखेगा।

7. दी गई कागज की शीट को मोड़ने पर कौन-कौन से बॉक्स बनेंगे?

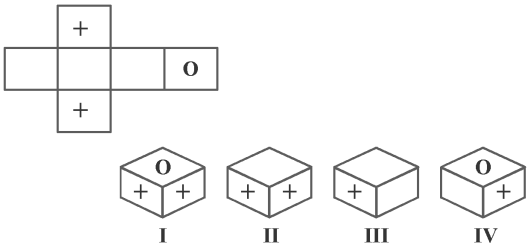

(A) केवल II और III (B) केवल III और IV
(C) केवल I और IV (D) केवल I और II **[B]**

व्याख्या—

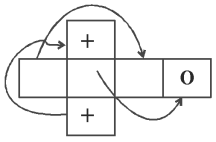

बॉक्स के रूप में मोड़ने पर ऊपर खाली, नीचे O, आमने-सामने खाली अथवा + आएगा।

अत: केवल विकल्प III व IV ही बनेंगे।

8. एक कागज को प्रथम दो चित्रों में दिखाई गई बिन्दु रेखाओं पर मोड़ा गया, और तीसरे चित्र में दिखाए गए तरीके के अनुसार काटा गया। खोले जाने पर यह कैसा दिखेगा?

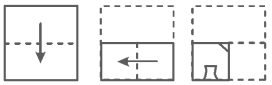

(A) (B)

(C) 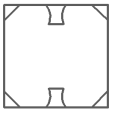 (D) **[B]**

व्याख्या—कागज को चित्रानुसार मोड़कर, काटकर वापस खोलने पर वह विकल्प आकृति (B) के समान दिखेगा।

9. नीचे एक कागज को मोड़ने और उसे काटने का तरीका दर्शाया गया है। यह कागज खोलने पर कैसा दिखाई देगा?

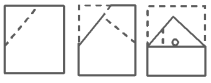

(A) 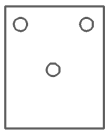 (B) 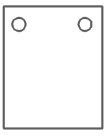

(C) 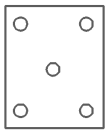 (D) 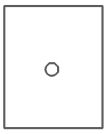 **[A]**

व्याख्या—कागज मोड़कर व चित्रानुसार काटकर पुन: खोलने पर वह विकल्प आकृति (A) जैसी दिखाई देगी।

10. एक कागज़ को मोड़ने का क्रम, तथा मुड़े हुए कागज़ को काटे जाने का ढंग, नीचे दिए गए चित्रों में प्रदर्शित है। खोले जाने पर यह कागज़ कैसा दिखाई देगा?

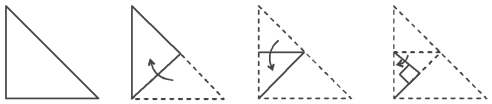

(A) 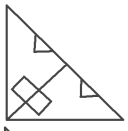 (B) 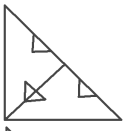

(C) 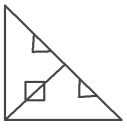 (D) 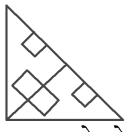 **[D]**

व्याख्या—कागज को मोड़कर काटकर वापस खोलने पर वह विकल्प (D) अदृश्य दिखेगा।

11. कागज की दी गई शीट को मोड़े जाने पर निम्नांकित में से कौनसा/से बॉक्स बनेगा?

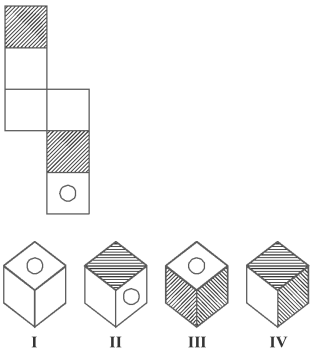

(A) केवल II और III
(B) केवल I, II और IV
(C) केवल III और IV
(D) केवल I और IV **[B]**

व्याख्या—कागज को मोड़कर बॉक्स की आकृति होगी—
चित्र I, II और IV के समान।

12. उस विकल्प का चयन करें जो नीचे दी गई पारदर्शी शीट (प्रश्न चित्र) को दिखाई गई बिंदुदार रेखा पर मोड़ने पर दिखता है।

प्रश्न आकृति

उत्तर आकृति

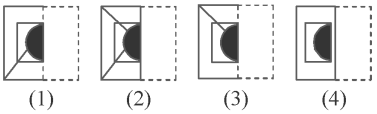

Unit-II : सामान्य विज्ञान

1 भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन [Physical and Chemical Changes]

- एक पदार्थ के दूसरे पदार्थ में बदलने पर या एक अवस्था से दूसरी **अवस्था में परिवर्तन** के कारण ही नए पदार्थ का निर्माण होता है।
- पदार्थ में होने वाले परिवर्तनों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—
  (1) भौतिक परिवर्तन (2) रासायनिक परिवर्तन

भौतिक परिवर्तन

- पदार्थों में होने वाला वह परिवर्तन जिसमें उनकी भौतिक अवस्था में परिवर्तन होता है किन्तु पदार्थों के **रासायनिक संघटन** एवं रासायनिक गुणों में कोई परिवर्तन नहीं होता है, भौतिक परिवर्तन कहलाता है।
  उदाहरण—सोने का पिघलना, काँच का टूटना, शक्कर का पानी में घुलना, लोहे का चुम्बक में बदलना, संघनन, आसवन, उर्ध्वपातन आदि।

भौतिक परिवर्तन के गुण

- भौतिक परिवर्तन में **पदार्थ के भौतिक गुणों** जैसे आयतन, अवस्था, ताप, घनत्व, रंग आदि में परिवर्तन होता है।
- पदार्थ के रासायनिक संघटन तथा रासायनिक गुणों में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
- यह परिवर्तन **उत्क्रमणीय** होता है।
- यह परिवर्तन **अस्थायी** होता है।

रासायनिक परिवर्तन

- पदार्थों में होने वाला वह परिवर्तन जिसमें नया पदार्थ प्राप्त होता है जो रासायनिक संघटन तथा रासायनिक गुणों में मूल पदार्थ से पूर्णतः भिन्न होता है, **रासायनिक परिवर्तन** कहलाता है।
  उदाहरण—कोयले का जलना, लोहे पर जंग लगना, दूध से दही बनना, अवक्षेपण, दहन, किण्वन आदि।

रासायनिक परिवर्तन के गुण

- रासायनिक परिवर्तन से जो नए पदार्थ बनते हैं वे मूल पदार्थ से रासायनिक गुणों तथा संघटन में भिन्न होते हैं।
- यह परिवर्तन अनुत्क्रमणीय होता है।
- यह परिवर्तन स्थाई होता है।
- इस परिवर्तन में पदार्थों के भौतिक व रासायनिक गुण बदल जाते हैं।

रासायनिक समीकरण

- रासायनिक अभिक्रिया में **पदार्थों को अणुसूत्रों एवं प्रतीकों की सहायता** से प्रदर्शित किया जाता है, उसे रासायनिक समीकरण कहते हैं।
- रासायनिक अभिक्रिया में भाग लेने वाले पदार्थ अभिकारक या क्रियाकारक एवं अभिक्रिया के फलस्वरूप बनने वाले पदार्थ **उत्पाद** कहलाते हैं।
- किसी रासायनिक समीकरण में क्रियाकारक तीर के निशान के बाँयी तरफ तथा उत्पाद दाँयी तरफ लिखे जाते हैं। तीर का चिह्न **अभिक्रिया की दिशा** को दर्शाता है।
- किसी रासायनिक अभिक्रिया में प्रयुक्त **उत्प्रेरक तीर के निशान के ऊपर** लिखा जाता है।
- रासायनिक समीकरण क्रियाकारक व उत्पाद में **अणुओं की संख्या, द्रव्यमान, पदार्थों की भौतिक अवस्था, अक्रमणीयता** एवं **अभिक्रिया** के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ जैसे **ताप, दाब, उत्प्रेरक** आदि की सूचनाएँ प्रदान करती है।
- रासायनिक समीकरण अभिक्रिया की पूर्णता एवं क्रियाकारक व उत्पाद की सान्द्रता के बारे में कोई जानकारी नहीं देता है।
- जब किसी रासायनिक समीकरण के दोनों पक्षों में अभिकारक व उत्पाद के परमाणुओं की संख्या समान होती है तो **संतुलित रासायनिक समीकरण** कहलाती है।
- यदि किसी रासायनिक समीकरण के दोनों पक्षों के तत्वों के परमाणुओं की संख्या असमान हो तो ऐसी समीकरण **असंतुलित रासायनिक समीकरण या कंकाली रासायनिक** समीकरण कहलाती है।
- रासायनिक अभिक्रिया के प्रमुख अभिलक्षणों में गैस निकलना, अवक्षेप बनना, ताप व रंग परिवर्तन तथा अवस्था परिवर्तन शामिल है।

रासायनिक अभिक्रिया

- "किसी पदार्थ में रासायनिक परिवर्तन होने को **रासायनिक अभिक्रिया** कहते हैं।" रासायनिक क्रिया द्वारा जब एक पदार्थ दूसरे पदार्थ में बदलता है तो उसके रासायनिक **संघटन** एवं रासायनिक **गुण** मूल पदार्थ से भिन्न होते हैं किन्तु पदार्थों के **कुल द्रव्यमान** में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
- रासायनिक अभिक्रिया को रासायनिक समीकरण से व्यक्त किया जाता है। जैसे मैग्निशियम के रिबन को ऑक्सीजन में जलाने पर मैग्नीशियम ऑक्साइड का श्वेत चूर्ण बनता है।

$$2mg_{(s)} + O_{2(g)} \longrightarrow 2mgo_{(s)}$$

रासायनिक अभिक्रिया के प्रकार

- अभिकारकों के संयोग करने, बंध के बनने व टूटने, अभिक्रिया की प्रकृति एवं वेग के आधार पर रासायनिक अभिक्रियाएँ विभिन्न प्रकार की होती है—

संयोजन अभिक्रिया/योगात्मक अभिक्रिया

- दो या दो से अधिक पदार्थों (तत्व या यौगिक) के संयोग से एक नए पदार्थ का बनना संयोजन या योगशील अभिक्रिया कहलाती है। उदाहरण—

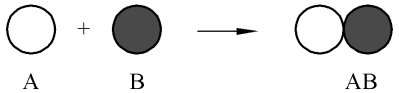

(i) अकार्बनिक संयोजन अभिक्रिया—

$$2Mg + O_2 \rightarrow 2MgO$$
$$NH_3 + HCl \rightarrow NH_4Cl$$

Unit-II : आपदा प्रबन्धन एवं जलवायु परिवर्तन

1 आपदा प्रबन्धन (परिचय एवं वर्गीकरण) [Disaster Management (Introduction and Classification)]

आपदा का अर्थ (Meaning of Disaster)

- ''आपदा'' शब्द का मूल फ्रेंच शब्द ''डिसआस्ट'' (Desastre) से लिया गया है। जो दो भागों ''डिस'' (Des) अर्थात ''बुरा'' (Bad) और ''अस्तर'' (Astre) अर्थात ''तारा'' (Star) से मिलकर बना है।
- प्राचीन समय में आपदाओं का कारण प्रतिकूल ग्रहों को माना जाता था।
- वर्तमान समय में, ''आपदा'' का सामान्यतः उपयोग उन प्राकृतिक और मानव-निर्मित घटनाओं के लिए किया जाता है, जो किसी क्षेत्र में गंभीर क्षति और कष्ट पैदा करती हैं तथा जिनका समाधान क्षेत्रीय संसाधनों द्वारा करना कठिन होता है।
- **आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005** के अनुसार, ''आपदा'' का अर्थ है किसी क्षेत्र में मानव-निर्मित या प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न तबाही, दुर्घटना, या लापरवाही, जो मानव जीवन, संपत्ति, पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुंचाती है।
- **अंतरराष्ट्रीय रेड क्रॉस सोसायटी** के अनुसार, ''आपदा अचानक घटित होने वाली एक ऐसी घटना है, जो समाज और समुदाय की कार्यप्रणाली को गंभीर रूप से प्रभावित करती है, और सामाजिक, आर्थिक, व पर्यावरणीय क्षति का कारण बनती है। ये घटनाएं समुदाय के संसाधनों से परे होती हैं।''
- **संयुक्त राष्ट्र आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यालय (UNDRR)** के अनुसार, आपदा एक समुदाय के कामकाज को गंभीर रूप से प्रभावित करती है। यह मानवीय, भौतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय क्षति का कारण बनती है, जो समुदाय की वहनीय क्षमता से परे होती है।
- यह संकट, सुभेद्यता की स्थितियों और जोखिम के संभावित नकारात्मक परिणामों को कम करने के अपर्याप्त उपायों या क्षमता के संयोजन का परिणाम है।
- आपदा से होने वाली क्षति को सामान्यतः भौतिक इकाइयों (जैसे - आवास के लिए वर्ग मीटर, सड़कों के लिए किलोमीटर आदि) में मापा जाता है।
- यह प्रभावित क्षेत्र में भौतिक परिसंपत्तियों के संपूर्ण या आंशिक विनाश से हुई हानि को निरूपित करती है।

आपदाओं के प्रभाव

- आपदाओं से सम्बन्धित कुछ प्रभाव निम्नानुसार हैं—
  - आर्थिक और सामाजिक संरचना पर प्रतिगामी प्रभाव
  - सामाजिक आवश्यकताओं (आवास, भोजन, चिकित्सा) में विघटन
  - संचार, यातायात और आधारभूत संरचना में बाधा
  - पलायन (दीर्घकालिक एवं अल्पकालिक)
  - कानून एवं व्यवस्था की समस्याएं
  - मनोवैज्ञानिक आघात
  - आजीविका की हानि
  - जीवन चक्र में गिरावट
  - जन और संपत्ति की क्षति
  - महामारी का खतरा

आपदाओं का वर्गीकरण (Classification of of Disaster)

1. जल और जलवायु संबंधी आपदाएं

- जल और जलवायु संबंधी आपदाएं निम्न प्रकार हैं—
  - बाढ़ (Floods)
  - चक्रवात (Cyclones)
  - बवंडर और तूफान (Tornadoes and Hurricanes)
  - ओला वृष्टि (Hailstorm)
  - बादल फटना (Cloud Burst)
  - ऊष्मा लहर और शीत लहर (Heat Wave and Cold Wave)
  - सूखा (Droughts)
  - हिमस्खलन (Snow Avalanche)
  - समुद्री कटाव (Sea Erosion)
  - आकाशीय बिजली (Thunder and Lightning)
  - सुनामी (Tsunami)

2. भौगोलिक आपदाएं

- भौगोलिक आपदाएं निम्न प्रकार हैं—
  - भूस्खलन और कीचड़ प्रवाह (Landslides and Mudflows)
  - भूकंप (Earthquakes)
  - बांध टूटना (Dam Failures)

3. रासायनिक, औद्योगिक और परमाणु आपदाएं

- रासायनिक, औद्योगिक और परमाणु आपदाएं निम्न प्रकार हैं—
  - रासायनिक और औद्योगिक आपदाएं (Chemical and Industrial Disasters)
  - परमाणु आपदाएं (Nuclear Disasters)

4. दुर्घटनाजन्य आपदाएं

- दुर्घटनाजन्य आपदाएं निम्न प्रकार हैं—
  - दावानल (Forest Fires)
  - शहरी आग (Urban Fires)
  - खदान में आग (Mine Fires)
  - तेल रिसाव (Oil Spills)
  - इमारत ढहना (Building Collapse)
  - बम विस्फोट (Bomb Blasts)
  - पर्व संबंधी आपदाएं (Festival Disasters)
  - विद्युत आपदाएं (Electrical Fires)

Unit-II : भारतीय संविधान एवं राजस्थान के विशेष संदर्भ में राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

1 संविधान का परिचय एवं आधारभूत लक्षण [Introduction & Basic Features of the Constitution]

भारतीय संविधान

- संविधान किसी भी देश के आधारभूत **कानूनों का संग्रह** होता है। इसके द्वारा न केवल सरकार का गठन होता है अपितु सरकार और नागरिकों के आपसी सम्बन्धों का निर्धारण भी होता है।
- संविधान देश की सरकार के विभिन्न अंगों अर्थात् **व्यवस्थापिका, कार्यपालिका** और **न्यायपालिका** का स्वरूप तय करता है। उनकी शक्तियों एवं सीमाओं का फैसला करता है।
- नागरिकों के अधिकार कर्त्तव्य क्या होंगे, पुलिस एवं न्यायप्रणाली कैसी होगी आदि सभी बातों का निर्धारण देश के संविधान द्वारा होता है।
- इस प्रकार संविधान किसी राष्ट्र का जीवन्त स्वरूप होता है।

संविधान निर्माण के प्रयास

- सर्वप्रथम 1895 में बाल गंगाधर तिलक द्वारा ''स्वराज विधेयक'' में भारतीयों के संविधान सभा के सिद्धान्तों का दर्शन देखने को मिलता है।
- सन् 1922 ई. में महात्मा गाँधी ने भारतीयों द्वारा संविधान के निर्माण की मांग प्रस्तुत की। उन्होंने कहा, ''भारतीयों का संविधान की इच्छानुसार होना चाहिए।''
- सन् 1928 ई. में मोतीलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत नेहरू रिपोर्ट में प्रस्ताव रखा।
- सन् 1934 में रॉय वामपंथी आंदोलन के प्रखर नेता एम.एन. रॉय ने संविधान सभा के गठन का प्रस्ताव रखा।
- वर्ष 1935 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने प्रथम बार भारत के संविधान के निर्माण के लिए आधिकारिक रूप से संविधान सभा के गठन की मांग की।
- वर्ष 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से पंडित जवाहरलाल नेहरू ने घोषणा की कि स्वतंत्र भारत के संविधान का निर्माण वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी गई संविधान सभा द्वारा किया जाएगा और इसमें कोई बाहरी हस्तक्षेप नहीं होगा।
- नेहरू जी की इस मांग को अंततः ब्रिटिश सरकार ने सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया गया। इसे सन् 1940 के **अगस्त प्रस्ताव** के नाम से जाना जाता है।
- **क्रिप्स मिशन–मार्च, 1942**—ब्रिटिश प्रधानमंत्री विन्स्टन चर्चिल ने 11 मार्च, 1942 को क्रिप्स मिशन की घोषणा की। ब्रिटेन के युद्ध मंत्री स्टेफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में एक विशिष्ट मण्डल 23 मार्च, 1942 को भारत भेजा तथा 30 मार्च, 1942 को प्रस्ताव प्रस्तुत किये जिसे क्रिप्स मिशन नाम से जाना जाता है।
- कांग्रेस के मिशन द्वारा भारत के पूर्ण स्वतंत्रता के स्थान पर डोमिनियन स्टेटस का दर्जा दिए जाने, देशी रियासतों के प्रतिनिधियों के लिए निर्वाचन की जगह मनोनयन की व्यवस्था, प्रांतों को भारतीय संघ से पृथक संविधान बनाने की व्यवस्था के विरोध में क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों को अस्वीकार किया।
- सत्ता के त्वरित हस्तांतरण की योजना के अभाव तथा प्रतिरक्षा के मुद्दे पर वास्तविक भागीदारी न होने और गवर्नर जनरल को पूर्ववत् सर्वोच्चता दिए जाने से भी कांग्रेस असंतुष्ट थी।

कैबिनेट मिशन योजना

- क्रिप्स मिशन की असफलता के बाद 9 फरवरी 1946 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने भारत में एक कैबिनेट मिशन भेजने की घोषणा की।
- 24 मार्च 1946 को यह मिशन भारत पहुँचा। इसमें तीन सदस्य—**सर स्टैनफोर्ड क्रिप्स, ए.वी. अलेक्जेण्डर** तथा **लार्ड पैथिक लॉरेंस** थे।
- कैबिनेट मिशन योजना को भारत में स्वीकार किया गया जिसके निम्न कारण थे—
  - (i) भारत के विभाजन को अस्वीकार कर दिया गया।
  - (ii) अखिल भारतीय संघ बनाने का प्रावधान।
  - (iii) भारतीय संविधान, संविधान सभा द्वारा तैयार किया जाएगा तथा इसके सभी सदस्य भारतीय होंगे।
  - (iv) इसमें कुल **389** सदस्य होंगे जिसमें **289** प्रांतों, **चार** सदस्य चीफ कमिश्नर प्रांतों के तथा **93** सदस्य भारतीय रियासतों के होंगे।
  - (v) प्रत्येक प्रांतों द्वारा भेजे गए सदस्यों की संख्या **जनसंख्या** के आधार पर निश्चित की जाएगी।
  - (vi) भारतीय रियासतों से भी जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधि आने थे किन्तु उनके चुनने की विधि का निर्णय शासकों के परामर्श से करना था।
- इस प्रकार कांग्रेस ने संविधान सभा द्वारा स्वतंत्र तथा अखण्ड लोकतंत्रीय भारत के संविधान बनने की आशा से प्रेरित होकर उसको स्वीकार किया।
- मुस्लिम लीग ने इससे पाकिस्तान के बनने के बीज के रूप में देखकर इसको स्वीकार किया।

संविधान सभा

- चुने गए जनप्रतिनिधियों की जो सभा संविधान नामक विशाल दस्तावेज को लिखने का काम करती है उसे संविधान सभा कहते हैं।

संविधान सभा का गठन

- कैबिनेट मिशन योजना द्वारा सुझाए गए प्रस्तावों के तहत नवम्बर 1946 में संविधान सभा का गठन हुआ।
- प्रान्तों में संयुक्त प्रान्त से सर्वाधिक सदस्य (55) तथा रियासतों में से सर्वाधिक सदस्य मैसूर रियासत (7) से थे।
- संविधान सभा के चुनावों में एक मात्र रियासत हैदराबाद थी जिसने भाग नहीं लिया।

Unit-III : राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

1 राजस्थान की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ [Main Historical Events of Rajasthan]

इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत

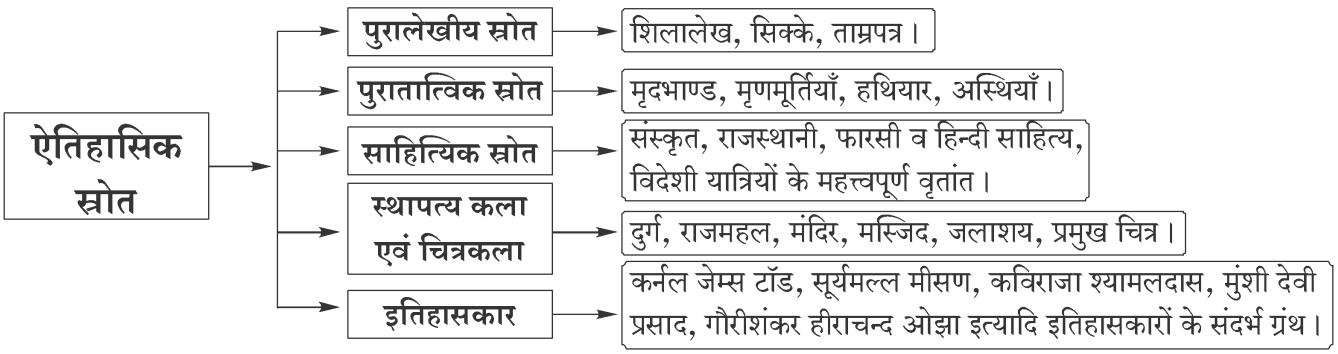

1. शिलालेख

❖ राजस्थान में बड़े स्तर पर पुरातात्विक सर्वे का कार्य सर्वप्रथम **1871 ई.** में **ए.सी.एल. कार्माइस** के निर्देशन में प्रारम्भ किया गया।

क्र. सं.	अभिलेख	स्थापना वर्ष	प्राप्ति स्थल (जिला)	जानकारी
1.	**बिजोलिया शिलालेख**	1170 ई.	**बिजोलिया (भीलवाड़ा)**	❖ संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण इस शिलालेख के **रचयिता गुणभद्र** माने जाते हैं। ❖ सोमेश्वर चौहान के समय के इस शिलालेख में **सांभर व अजमेर के चौहानों को वत्स गौत्रीय ब्राह्मण** बताते हुए उनकी वंशावली दी गई है।
2.	**चीरवे का शिलालेख**	1273 ई.	**चीरवा गाँव (उदयपुर)**	❖ इसमें **बप्पा रावल से लेकर समरसिंह** तक की उपलब्धियों का वर्णन है।
3.	**राज प्रशस्ति**	1676 ई.	**राजसमंद झील (राजसमंद)**	❖ इस पद्यमय रचना के रचयिता **रणछोड़ भट्ट तैलंग** माने जाते हैं। ❖ राजसमंद झील की **नौ चौकी की पाल** पर 25 सफेद पत्थरों पर संस्कृत में उत्कीर्ण यह प्रशस्ति **विश्व का सबसे बड़ा** शिलालेख माना जाता है। ❖ महाराणा राजसिंह द्वारा स्थापित इस प्रशस्ति में मेवाड़ के **बप्पा रावल से राजसिंह** तक के शासकों की वंशावली व उपलब्धियों का वर्णन है।
4.	**घोसुण्डी** (हाथीबाड़ा) **शिलालेख**	दूसरी शताब्दी ई.पू.	**घोसुण्डी, नगरी (चित्तौड़गढ़)**	❖ वैष्णव धर्म से सम्बन्धित यह अभिलेख **ब्राह्मी लिपि** में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है जिसमें **संकर्षण एवं वासुदेव की पूजा का उल्लेख** है। ❖ यह सर्वप्रथम **डी.आर. भण्डारकर** द्वारा पढ़ा गया। ❖ इसमें **गजवंश** के सर्वतात द्वारा **अश्वमेघ यज्ञ** करने का वर्णन है।
5.	**घटियाला अभिलेख**	861 ई.	**घटियाला (जोधपुर)**	❖ घटियाला में एक स्तंभ पर संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण इस शिलालेख के लेखक **मग** और उत्कीर्णकर्त्ता **कृष्णेश्वर** थे। ❖ इसमें मण्डोर (जोधपुर) के **प्रतिहार शासक कुक्कुक का वर्णन** है।
6.	**राणकपुर प्रशस्ति**	1439 ई.	**राणकपुर (पाली)**	❖ यह प्रशस्ति **संस्कृत भाषा** व **नागरी लिपि** में है। ❖ राणकपुर चौमुखा जैन मंदिर में स्थापित इस प्रशस्ति में **बप्पा रावल से राणा कुंभा तक** का उल्लेख है। ❖ इसका सूत्रधार प्रसिद्ध वास्तुकार **देपाक** (**दीपा**) था।

15 ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से राजस्थान की हस्तियाँ
[Celebrities of Rajasthan from Historical and Cultural Point of View]

नाम (जन्म स्थल)	विशेष विवरण
सूर्यमल्ल मीसण (बूँदी)	राजस्थान के राज्य कवि एवं बूँदी के शासक महाराव रामसिंह के समकालीन प्रसिद्ध चारण कवि सूर्यमल्ल मीसण ने सात ग्रंथों वीर सतसई, वंश भास्कर, राम रंजाट, बलवद्-विलास, छंद-मयूख, धातु रूपावली एवं सती रासो की रचना की।
पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (सिरोही)	1911 में इन्होंने **'सिरोही राज्य का इतिहास'** लिखा। श्री ओझा राजस्थान के प्रसिद्ध पुरातत्ववेता भी माने जाते हैं। **'राजपूताने का इतिहास'** तथा **'भारतीय प्राचीन लिपिमाला'** इनके महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।
मुंशी देवी प्रसाद (जयपुर)	इन्होंने बाबरनामा, हुमायूँनामा, जहाँगीरनामा आदि फारसी ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया तथा **'स्वप्न राजस्थान'** नामक ग्रंथ में राजपूत शासकों के चरित्र का वर्णन किया।
कर्नल जेम्स टॉड (इस्लिंगटन, इंग्लैण्ड)	इन्होंने 1817–1822 तक पश्चिमी राजपूत राज्यों में ईस्ट इंडिया कम्पनी के पॉलिटिकल एजेंट के रूप में कार्य करते हुए **'एनाल्स एण्ड एण्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान'** (मूल नाम हिस्ट्री ऑफ सेण्ट्रल एण्ड वेस्टर्न ऑफ इंडिया) नामक पुस्तक लिखी। इनकी अन्य पुस्तक **'ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया'** (1839) इनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुई।
वीर दुर्गादास (जोधपुर)	दुर्गादास राठौड़ ने सरदारों को संगठित कर बालक अजीतसिंह को शाही चंगुल से बचाया। मेवाड़ के साथ संधि के समय दुर्गादास ने कूटनीति पूर्ण तरीके से अजीतसिंह को निकालकर मराठा दरबार में ले गया। दुर्गादास को अजीतसिंह द्वारा जोधपुर से निकाले जाने पर वे उदयपुर के महाराणा अमरसिंह की सेवा में गया जहाँ उन्हें रामपुरा का हाकिम नियुक्त किया गया।
महाराणा प्रताप	1572 ई. में गोगुंदा में राजसिंहासन पर बैठे इनका राज्याभिषेक कुंभलगढ़ में हुआ। प्रताप आदिवासियों में **'कीका'** के नाम से प्रसिद्ध थे। महाराणा प्रताप व अकबर के मध्य हल्दीघाटी का प्रसिद्ध युद्ध हुआ।
मोतीलाल तेजावत	**'आदिवासियों का मसीहा'** (बावजी) कहे जाने वाले तेजावत 1920 में चित्तौड़गढ़ स्थित 'मातृकुण्डिया' नामक स्थान पर **'एकी आन्दोलन'** प्रारम्भ किया तथा उदयपुर व चित्तौड़गढ़ से लोकसभा सदस्य एवं राजस्थान खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष रहे।
मोहनलाल सुखाड़िया	**'आधुनिक राजस्थान के निर्माता'** सुखाड़िया 13 नवम्बर, 1954 को राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा 17 वर्ष तक शासन करके **'राजस्थान में सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री'** रहने का गौरव प्राप्त किया। इन्होंने इन्दुबाला के साथ अंतर्जातीय विवाह करके मेवाड़ के सामाजिक जीवन में क्रांति लाई। राजस्थान के मुख्यमंत्रित्व के पश्चात् वे तीन राज्यों (कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश व तमिलनाडु) के राज्यपाल रहे।
हरिदेव जोशी	तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे हरिदेव ने **'दैनिक नवयुग'** व **'कांग्रेस संदेश'** नामक पत्रिकाओं का संपादन किया तथा डूँगरपुर के आदिवासियों को राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए जागृत किया।
गुरु गोविन्द गिरि (डूँगरपुर)	गोविन्द गिरि ने **'सम्प सभा'** की स्थापना करके आदिवासी भीलों में समाज सुधार आन्दोलन चलाया। 1908 में इनकी कार्यस्थली मानगढ़ पहाड़ी पर एक वार्षिक सभा के दौरान अंग्रेजी सेना ने फायरिंग कर भीषण नरसंहार किया।
पं. नयनूराम शर्मा	हाड़ौती क्षेत्र के प्रमुख क्रांतिकारी पं. नयनूराम शर्मा ने **हाड़ौती प्रजामण्डल की स्थापना** की। इनकी 14 अक्टूबर, 1914 की रात्रि में हत्या कर दी गई।
हरिभाऊ उपाध्याय	हरिभाऊ ने **'औदुम्बर'** नामक मासिक पत्रिका का संपादन किया तथा 1916 से 1919 तक महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ **'सरस्वती'** पत्रिका का संपादन किया। इन्हें राजस्थान का प्रथम डिक्टेटर बनाया गया। इन्होंने **'सस्ता साहित्य मण्डल'** एवं हटूण्डी (अजमेर) में **गाँधी आश्रम** (1917) व **महिला शिक्षा सदन** (1945) की स्थापना की। 1952 में अजमेर राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री बने एवं 1966 में पद्मश्री से सम्मानित हुए।
पं. अभिन्न हरि (बद्रीनाथ)	इन्होंने कोटा में **'लोक सेवक'** साप्ताहिक समाचार पत्र प्रारम्भ किया तथा 1941 में कोटा राज्य प्रजामण्डल के अध्यक्ष बने। 1942 की अगस्त क्रांति में महात्मा गाँधी के आह्वान पर 8–9 अगस्त, 1942 को बम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में कोटा से सम्मिलित होने वाले एकमात्र प्रतिनिधि थे।

Unit-III : भूगोल : राजस्थान

1 राजस्थान : स्थिति एवं विस्तार [Rajasthan : Location and Extent]

- 1 नवम्बर, 1956 को राजस्थान के एकीकरण के अंतिम चरण के दौरान वर्तमान राजस्थान की भौगोलिक सीमाएँ अस्तित्व में आयी, प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण की आवश्यकताओं के चलते समय-समय पर यहाँ नवीन जिलों एवं संभागों का गठन हुआ है।
- एकीकरण के अंतिम चरण में 1 नवम्बर 1956 ई. को राजस्थान में कुल 26 जिले थे। **26वां** जिला **अजमेर** को बनाया गया था।
- 15 अप्रैल 1982 को भरतपुर से अलग होकर **धौलपुर** राज्य का **27वां** जिला बनाया गया।
- 10 अप्रैल 1991 को कोटा से पृथक करके **बारां** को राज्य का **28वां** जिला बनाया गया तथा इसी दिन जयपुर से अलग करके **दौसा** को राज्य का **29वां** जिला एवं उदयपुर से पृथक करके **राजसमंद** को राज्य का **30वां** जिला बनाया गया था।
- इसी क्रम में 12 जुलाई 1994 को श्रीगंगानगर से विभाजित करके **हनुमानगढ़** को राजस्थान का **31वां** जिला बनाया गया।
- इसी प्रकार 19 जुलाई 1997 को सवाई माधोपुर से अलग करके **करौली** को राज्य का **32वां** जिला बनाया गया तथा 26 जनवरी 2008 को तीन जिलों (उदयपुर, बांसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़) का पुनर्गठन करके **प्रतापगढ़** को राजस्थान का **33वां** जिला बनाया गया था।
- राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा की अनुपालना में 21 मार्च 2022 को नवीन जिलों के निर्माण की अभिशंषा देने हेतु सेवानिवृत आई.ए.एस. श्री रामलुभाया की अध्यक्षता में एक **उच्च स्तरीय समिति** गठित की गई थी।
- उक्त कमेटी की अंतरिम रिपोर्ट के आधार पर 17 मार्च 2023 को माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा विधानसभा के बजट सत्र के दौरान **19 नए जिलों** एवं **3 नए संभागों** की घोषणा की गई थी।
- **रामलुभाया कमेटी** द्वारा 02 अगस्त 2023 को अपनी अंतिम रिपोर्ट राज्य सरकार को प्रस्तुत की गई, इस समिति की रिपोर्ट पर 04 अगस्त 2023 को मंत्रीमण्डल द्वारा विचार-विमर्श कर 19 नए जिलों एवं 3 नए संभागों के गठन का अनुमोदन किया गया।
- अनुमोदन के पश्चात् 06 अगस्त 2023 को राज्य सरकार द्वारा 19 नए जिलों एवं 3 संभागों की अधिसूचना जारी की गई है। यह अधिसूचना **07 अगस्त 2023** से प्रभावी हो गयी।
- राजस्थान सरकार द्वारा **29 दिसम्बर 2024** को जारी नवीन जिलों की अधिसूचना के अनुसार राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 15 व 16 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग कर एवं इस संबंध में जारी पूर्व अधिसूचनाओं का अधिक्रमण करते हुए 5 अगस्त 2023 को गठित 19 जिलों में से **9 जिलों** को निरस्त करते हुए, इन जिलों में सम्मिलित उपखण्ड एवं तहसीलों को यथावत मूल जिलों में शामिल किया गया है जो इस प्रकार हैं—

क्र. सं.	निरस्त किये गये जिलें	मूल जिला जिसमें शामिल किया गया
1.	अनूपगढ़	श्री गंगानगर, बीकानेर
2.	दूदू एवं जयपुर ग्रामीण	जयपुर
3.	गंगापुर सिटी	सवाई माधोपुर, करौली
4.	जोधपुर ग्रामीण	जोधपुर
5.	केकड़ी	अजमेर, टोंक
6.	नीमकाथाना	सीकर, झुंझुनूं
7.	सांचौर	जालौर
8.	शाहपुरा	भीलवाड़ा

Note:—पुनर्गठन के बाद वर्तमान में राजस्थान में जिलों की संख्या **41** रह गई है। पुनर्गठित नवीन जिलों का वर्णन नीचे दिया गया हैं—

जयपुर

जिला	उपखण्ड (16)	तहसील (21)
जयपुर	जयपुर	जयपुर, कालवाड़
	आमेर	आमेर
	सांगानेर	सांगानेर
	बस्सी	बस्सी, तूंगा
	चाकसू	चाकसू, कोटखावदा
	जमवारामगढ़	जमवारामगढ़, आंधी
	चौमूं	चौमूं
	सांभरलेक	फुलेरा मु. सांभरलेक
	माधोराजपुरा	माधोराजपुरा
	रामपुरा डाबडी	रामपुरा डाबडी, जालसू
	किशनगढ़ रेनवाल	किशनगढ़ रेनवाल
	जोबनेर	जोबनेर
	शाहपुरा	शाहपुरा
	दूदू	दूदू
	फागी	फागी
	मौजमाबाद	मौजमाबाद

8 जनसंख्या : आकार, वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात एवं साक्षरता [Population : Size, Growth, Distribution, Density, Sex Ratio & Literacy]

❖ भारत सरकार के **गृह मंत्रालय** के अधीन **जनगणना आयुक्त एवं रजिस्ट्रार जनरल** के द्वारा राज्यों/के.शा.प्र. के सहयोग से **प्रत्येक 10 वर्ष** के अंतराल में जनगणना करवायी जाती है। भारत की **प्रथम जनगणना 1872 ई.** में, प्रथम व्यवस्थित जनगणना-**1881** ई. में तथा **15वीं** जनगणना **2011 ई.** में की गयी। यह स्वतंत्र भारत की **7वीं** जनगणना है। **2011** की जनगणना के अनुसार **राजस्थान का देश में आठवाँ स्थान** है। **2 जून, 2014** को **तेलंगाना राज्य के गठन** के पश्चात् राजस्थान का **सातवाँ स्थान** हो गया है। राज्य की जनसंख्या **6.86 करोड़** है जो देश की जनसंख्या का **5.67%** है।

राजस्थान की जनगणना 2001 व 2011 का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	तथ्य	2001	2011 (अनंतिम)	2011 (अंतिम)
1.	**राजस्थान की जनसंख्या**	5,65,07,188	6,86,21,012	**6,85,48,437**
2.	**जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किमी.)**	165	201	**200**
3.	**लिंगानुपात**	921	926	**928**
4.	**दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर**	28.41%	21.44%	**21.3%**
5.	**सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला**	जयपुर	जयपुर	**जयपुर**
6.	**न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला**	जैसलमेर	जैसलमेर	**जैसलमेर**
7.	**सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व**	जयपुर (471)	जयपुर (598)	**जयपुर (595)**
8.	**न्यूनतम जनसंख्या घनत्व**	जैसलमेर (13)	जैसलमेर (17)	**जैसलमेर (17)**
9.	**सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला**	डूँगरपुर (1022)	डूँगरपुर (990)	**डूँगरपुर (994)**
10.	**न्यूनतम लिंगानुपात वाला जिला**	जैसलमेर (821)	धौलपुर (845))	**धौलपुर (846)**
11.	**सर्वाधिक दशकीय वृद्धि दर** (2001-2011)	जैसलमेर (47.52%)	बाड़मेर (32.55%)	**बाड़मेर (32.5%)**
12.	**न्यूनतम दशकीय वृद्धि दर**	राजसमंद (19.97%)	गंगानगर (10.06%)	**गंगानगर (10.0%)**
13.	0-6 **आयु वर्ग की जनसंख्या का प्रतिशत**	18.84%	15.31%	**15.5%**
14.	0-6 **आयु वर्ग की सर्वाधिक जनसंख्या**	जयपुर	जयपुर	**जयपुर**
15.	0-6 **आयु वर्ग की न्यूनतम जनसंख्या**	जैसलमेर	जैसलमेर	**जैसलमेर**
16.	0-6 **आयु वर्ग का लिंगानुपात**	909	883	**888**
17.	0-6 **आयु वर्ग में सर्वाधिक लिंगानुपात**	बाँसवाड़ा (964)	प्रतापगढ़ (926)	**बाँसवाड़ा (934)**
18.	0-6 **आयु वर्ग में न्यूनतम लिंगानुपात**	गंगानगर (850)	झुँझुनूँ (831)	**झुँझुनूँ (837)**
19.	**कुल साक्षरता**	60.41%	67.06%	**66.1%**
20.	**पुरुष साक्षरता**	75.70%	80.51%	**79.2%**
21.	**महिला साक्षरता**	43.90%	52.66%	**52.1%**
22.	**सर्वाधिक साक्षरता**	कोटा (73.50%)	कोटा (77.48%)	**कोटा (76.6%)**
23.	**न्यूनतम साक्षरता**	बांसवाड़ा (44.60%)	जालौर (55.58%)	**जालौर (54.9%)**
24.	**सर्वाधिक पुरुष साक्षरता**	झुँझुनूँ	झुँझुनूँ	**झुँझुनूँ (86.9%)**
25.	**न्यूनतम पुरुष साक्षरता**	बाँसवाड़ा	प्रतापगढ़	**प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा (69.5%)**
26.	**सर्वाधिक महिला साक्षरता**	कोटा	कोटा	**कोटा (65.9%)**
27.	**न्यूनतम महिला साक्षरता**	जालौर	जालौर	**जालौर (38.5%)**

Unit-III : अर्थव्यवस्था : राजस्थान

1 ग्रामीण विकास, राज्य के विकास में उद्योग की भूमिका [Role of Industry in Rural Development, State Development]

ग्रामीण विकास

- ग्रामीण विकास, अपेक्षाकृत मुख्य धारा से दूर और बिखरी आबादी वाले ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता और आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु आवश्यक है।
- राज्य के नियोजित विकास के लिए क्रियान्वित की जाने वाली लगभग सभी विकास गतिविधियां ग्रामीण क्षेत्रों व ग्रामीण आबादी को लाभान्वित करती हैं। राज्य में विभिन्न स्तरों पर ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से ग्रामीण विशिष्ट विकास कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने के लिए पृथक से **ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग** संचालित है।
- ग्रामीण विकास विभाग द्वारा राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक कार्यक्रम/योजनाएं संचालित की जा रही हैं।
- इन कार्यक्रमों/योजनाओं का उद्देश्य गरीबी को कम करना, ग्रामीण क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं में वृद्धि करना, मज़दूरी आधारित रोजगार व स्वरोजगार के अवसर बढ़ाना और विकास व ग्रामीण आवास में क्षेत्रीय असंतुलन को मिटाना है।
- ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग द्वारा राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में निम्नलिखित योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं—

1. **राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (आर.जी.ए.वी.पी.) राजीविका**—इसकी स्थापना राजस्थान सरकार द्वारा ग्रामीण विकास विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में अक्टूबर, 2010 में एक स्वायत्त परिषद के रूप में की गई।
   - यह परिषद सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1958 के अन्तर्गत पंजीकृत है तथा इसके द्वारा स्वयं सहायता समूह आधारित संस्थानिक अवधारणा के आधार पर समस्त ग्रामीण आजीविका कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने का कार्य किया जा रहा है।
   - इस सोसायटी का उद्देश्य ग्रामीण निर्धनों के लिए स्थाई वित्तीय और प्रभावी संस्थानिक आधार सृजित करना, सतत आजीविका में वृद्धि के माध्यम से घरेलू आय में वृद्धि करना, वित्तीय व चिह्नित लोक सेवाओं तक उनकी पहुँच बढ़ाना और तेजी से बदलते बाहरी सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक परिदृश्य के अनुरूप उनकी व्यवहार क्षमता को बढ़ाना है।
   - वर्तमान में राजीविका द्वारा निम्नलिखित आजीविका परियोजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं—
     - ✧ राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एन.आर.एल.एम.) सम्पूर्ण राज्य में क्रियान्वित किया जा रहा है।
     - ✧ राष्ट्रीय ग्रामीण आर्थिक परिवर्तन परियोजना (एन.आर.ई.टी.पी.) राज्य के 9 जिलों के 36 ब्लॉकों में संचालित की जा रही है।
   - वित्तीय संसाधन - उपरोक्त योजनाओं में भारत सरकार का अंशदान 60 प्रतिशत एवं राज्य सरकार का अशंदान 40 प्रतिशत है।
   - राजीविका के अन्तर्गत क्रियान्वित की जा रही परियाजनाओं में की जाने वाली मुख्य गतिविधियों में संस्था निर्माण, क्षमता संवर्द्धन, वित्तीय समावेशन, आजीविका विकास एवं कनवर्जेन्स सम्मिलित है।
   - राजीविका के अन्तर्गत मार्च, 2024 तक 46.67 लाख गरीब परिवारों को 3,87,822 स्वयं सहायता समूहों, 31,032 ग्राम संगठन (वी.ओ.) एवं 1,040 क्लस्टर लेवल फेडरेशन के रूप में संगठित किया गया है।
   - राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद द्वारा 2,69,279 स्वयं सहायता समूहों को रिवॉल्विंग फण्ड द्वारा वित्तीय सहायता एवं 1,53,387 स्वयं सहायता समूहों को आजीविका सहायता (सामुदायिक निवेश निधि) उपलब्ध कराई गई है।
   - राजीविका के अन्तर्गत क्रमोन्नत हुए स्वयं सहायता समूहों में से कुल 2,95,138 स्वयं सहायता समूहों के बैंकों में बचत खाते खुलवाए गए हैं एवं उन्हें बैंकों के माध्यम से ₹6,517.08 करोड़ राशि का ऋण उपलब्ध कराया गया है।
2. **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना (एम.जी.एन.आर.ई.जी.एस.)**—इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध कराना एवं इसके द्वारा समावेशी विकास को बढ़ावा देना है।
   - यह सम्पूर्ण राज्य में संचालित है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में आजीविका सुरक्षा में वृद्धि के लिए, ऐसे प्रत्येक परिवार को एक वित्तीय वर्ष के दौरान 100 दिन का सुनिश्चित रोजगार उपलब्ध कराना है, जिसके वयस्क सदस्य अकुशल शारीरिक श्रम करने हेतु स्वेच्छा से तैयार है। योजना की मुख्य विशेषताएं निम्नानुसार हैं—
     - ✧ ग्राम पंचायत के सभी स्थानीय निवासी इस योजना के अन्तर्गत पंजीकरण हेतु पात्र हैं।
     - ✧ पंजीकरण के 15 दिवस में परिवार के सभी वयस्क सदस्यों को फोटोयुक्त जॉबकार्ड निःशुल्क जारी किए जाते हैं।
     - ✧ रोजगार हेतु आवेदन की तिथि सहित रसीद प्रदान की जाती है।
     - ✧ आवेदन की दिनांक से 15 दिवस में रोजगार उपलब्ध करवाने की गारण्टी है।
     - ✧ आवेदन के 15 दिवस की अवधि में रोजगार उपलब्ध नहीं होने की स्थिति में राज्य सरकार द्वारा बेरोजगारी भत्ता दिया जाता है।
     - ✧ गांव से 5 किमी. की परिधि में ही कार्य उपलब्ध करवाया जाता है। 5 किमी. से अधिक दूरी होने पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त मज़दूरी देय होती है।
     - ✧ किए गए कार्य के आधार पर मज़दूरी का भुगतान किया जाता है।

4 राज्य के विकास में खनिज क्षेत्र की भूमिका
[Role of Mineral Sector in the Development of the State]

- ❖ भारत में खनिजों की उपलब्धता और विविधता के मामले में राजस्थान सर्वाधिक समृद्ध राज्यों में से एक है।
- ❖ राजस्थान में 81 विभिन्न प्रकार के खनिजों के भंडार हैं। इनमें से वर्तमान में 58 खनिजों का खनन किया जा रहा है।
- ❖ राजस्थान सीसा एवं जस्ता अयस्क, सेलेनाईट और वॉलेस्टोनाइट का **एकमात्र उत्पादक राज्य** है।
- ❖ देश में चाँदी, केल्साइट और जिप्सम का लगभग सम्पूर्ण उत्पादन राजस्थान में होता है।
- ❖ राजस्थान देश में बॉल क्ले, फॉस्फोराइट, ओकर (गेरु), स्टेटाइट, फेल्सपार एवं फायर क्ले का भी प्रमुख उत्पादक है।
- ❖ राज्य का आयामी और सजावटी पत्थर जैसे - संगमरमर, सेण्डस्टोन एवं ग्रेनाईट आदि के उत्पादन में भी देश में प्रमुख स्थान है।
- ❖ भारत में सीमेन्ट ग्रेड व स्टील ग्रेड लाइम स्टोन का राज्य अग्रणी उत्पादक है।
- ❖ वर्तमान में खनन पट्टों को ई-नीलामी प्रक्रियाओं द्वारा प्रदान किया जा रहा है। राज्य में प्रधान खनिजों के लिए 148 पट्टे, अप्रधान खनिजों के लिए 16,817 खनन पट्टे एवं 17,454 खदान लाईसेन्स है।

खनिजों का वर्गीकरण

1. **धात्विक खनिज (Metallic Minerals)**—लोहा, चाँदी, टंगस्टन, मैंगनीज, सीसा-जस्ता, ताँबा, सोना, केडमियम, बॉक्साइट आदि।
   - **(a) लौह धात्विक खनिज (Iron Metallic Minerals)**—लोहा (Fe), एल्यूमिनियम (Al), एण्टीनम, गैलियम, लिथियम (Li), मैंगनीज (Mn), मर्करी, मॉलिब्डेनम, यूरेनियम (U), रेडमियम, थोरियम, टाइटेनियम आदि।
   - **(b) अलौह धात्विक खनिज (Non-Iron Metallic Minerals)**—ताँबा (Cu), निकिल (Ni), प्लेटिनम, सोना (Au), चाँदी (Ag), कोबाल्ट (Co), क्रोमियम (Cr), जिंक (Zn), लैड (Pb), बिस्मिथ, टंगस्टन (W), टेण्टलम/नियोबियन आदि।
2. **अधात्विक खनिज (Non-Metallic Minerals)**—एस्बेस्टॉस, अभ्रक, वोलस्टोनाइट, वरमीक्यूलाइट, फेल्सपार, सिलिका रेत, क्वार्ट्ज, डोलोमाइट, चायना क्ले, बॉलक्ले, फायरक्ले, पन्ना, गारनेट, जिप्सम ($CaSO_4 2H_2O$), राक फॉस्फेट, पाइराइट्स, चूना पत्थर, फ्लोर्सपार, बेराइट्स, बेन्टोनाइट, मुल्तानी मिट्टी, संगमरमर, ग्रेनाइट व इमारती पत्थर, सोपस्टोन, कैल्साइट, गेरू, नमक, केओलिन, स्लेट पत्थर आदि।
3. **ईंधन खनिज (Fuel Minerals)**—लिग्नाइट, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस आदि।
4. **आणविक खनिज (Atomic Minerals)**—लिथियम, यूरेनियम, बोरिलियम, थोरियम आदि।

राजस्थान के खनिज : एक दृष्टि में

खनिज (अयस्क)	सर्वाधिक उत्पादन	महत्त्वपूर्ण खनन क्षेत्र/भण्डार	उपयोग/विशेष विवरण
लौह-अयस्क (हेमेटाइट, लिमोनाइट, मैग्नेटाइट)	**जयपुर**	**जयपुर** -मोरीजा बानोल, **दौसा**-नीमला-राइसेला (रायसर), **सीकर**-रामपुरा, डाबला, थोई, **झुँझुनूँ**-डाबला-सिंघाना, **उदयपुर**-थूर हुण्डेर, नाथरा की पाल, **बूँदी**-लोहारपुरा, इन्द्रगढ़, **भीलवाड़ा**-बीगोद, बनेड़ा, **बाँसवाड़ा**-कमलपुरा, लामया, **डूँगरपुर**-तलवारा, खाचरिया, लोहारिया, **झालावाड़**-डग, पादरपाल	• मशीन निर्माण में • राज्य में कमी • जलज एवं आग्नेय चट्टानों से प्राप्त • देश में छठा स्थान
मैंगनीज (साइलोमैलीन, पाइरोलुसाइट, ब्रोनाइट)	**बाँसवाड़ा**	**बाँसवाड़ा**-लीलवाना, तलवाड़ा, कालाखूंटा, **उदयपुर**- तामेसरा, नेगड़िया, सरूपपुरा, देबारी, **सवाई माधोपुर**-रेवासा, **अलवर, राजसमंद**-नाथद्वारा	• लौह-इस्पात व शुष्क सेल निर्माण • रासायनिक उद्योग
सीसा-जस्ता (कैलेमिन जिंकाइट) (गेलेना)	**उदयपुर**	**उदयपुर**-देबारी, **सलूम्बर** - जावर, मोचिया मगरा, बरोड़ मगरा, जावरमाला, **राजसमंद** - राजपुरा-दरीबा, **भीलवाड़ा** - रामपुरा आँगूचा, गुलाबपुरा, देवास, सामोदी, **सवाईमाधोपुर** - चौथ का बरवाड़ा, **डूँगरपुर** - घूघरा, माण्डो, **बाँसवाड़ा**-बारडालिया, **अलवर** - गुढ़ा किशोरीदास, **अजमेर** - घुघरा, तीखी, सावर	• बर्तन व आभूषण निर्माण • रासायनिक उद्योग • **जावर**-देश में सीसे-जस्ते की सबसे बड़ी खान

6 राज्य की आय एवं बजट की अवधारणा [State Income and Concept of Budget]

राजकोषीय प्रबन्धन

❖ वर्ष 2022-23 में मुख्य राजकोषीय लक्ष्यों के सन्दर्भ में वित्तीय स्थिति का सारांश निम्नानुसार है—

✧ **राजस्व घाटा**—संशोधित अनुमान वर्ष 2022-23 में अनुमानित ₹32,310 करोड़ के स्थान पर राजस्व घाटा राशि ₹31,491 करोड़ रहा।

✧ **राजकोषीय घाटा**—वर्ष 2022-23 के संशोधित अनुमानों में अनुमानित ₹61,264 करोड़ के स्थान पर वास्तविक राजकोषीय घाटा ₹51,029 करोड़ रहा, जो कि राज्य सकल घरेलू उत्पाद का 3.76 प्रतिशत है, तथा एफ.आर. बी.एम. अधिनियम, 2005 के द्वारा अनुमत सीमा 4.37 प्रतिशत (विद्युत क्षेत्र के लिए 0.50 प्रतिशत एवं 50 वर्षीय ब्याज मुक्त ऋण के लिए 0.37 प्रतिशत अतिरिक्त सहित) से कम है।

❖ राज्य सरकार की राजकोषीय स्थिति/वित्तीय मानकों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार तालिका में दर्शाया गया है—

राजकोषीय स्थिति/परिमाप

क्र.	मद	2022-23 (₹ करोड़)
1.	**राजस्व प्राप्तियाँ**	**194988**
	✧ स्वयं का कर राजस्व	87347
	✧ कर भिन्न राजस्व	20564
	✧ केन्द्रीय करों में हिस्सा	57231
	✧ केन्द्रीय सहायता	29846
2.	**गैर साख पूंजीगत प्राप्तियाँ**	**436**
	इसमें से उदय योजनान्तर्गत व्यय	0
3.	**कुल प्राप्तियाँ (राजस्व प्राप्तियाँ + गैर साख पूंजीगत प्राप्तियाँ)**	**195424**
4.	**कुल व्यय**	**246452**
	इसमें से उदय योजनान्तर्गत व्यय	0
	✧ राजस्व व्यय	226479
	इसमें से (क) उदय योजनान्तर्गत व्यय	0
	इसमें से (ख) ब्याज भुगतान	30602
	✧ पूँजीगत परिव्यय	19798
	इसमें से उदय योजनान्तर्गत व्यय	0
	✧ उधार एवं अग्रिम	175
5.	**सकल राज्य घरेलू उत्पाद (प्रचलित कीमतों पर वर्ष 2011-12 की श्रृंखलानुसार)**	**1357851**
6.	**राजस्व घाटा**	**31491**
6 (अ)	राजस्व घाटा (उदय योजना रहित)	**31491**

क्र.	मद	2022-23 (₹ करोड़)
7.	**राजकोषीय घाटा**	**51029**
8.	**प्राथमिक घाटा**	20427
9.	राजकोषीय घाटे का सकल राज्य घरेलू उत्पाद से अनुपात प्रतिशत	**3.76**
10.	राजस्व प्राप्तियों में वृद्धि दर (प्रतिशत)	6.02
11.	राज्य के स्वयं के कर राजस्व में वृद्धि दर (%)	16.76
12.	सकल राज्य घरेलू उत्पाद से राजस्व प्राप्तियाँ (%)	14.36
13.	सकल राज्य घरेलू उत्पाद से राज्य के स्वयं का कर राजस्व (प्रतिशत)	6.43
14.	**वेतन एवं मजदूरी पर व्यय**	**59774**
	✧ राजस्व प्राप्तियों से प्रतिशत	30.66
	✧ राजस्व व्यय से प्रतिशत (ब्याज एवं पेंशन भुगतान के अतिरिक्त)	35.06
15.	**ब्याज भुगतान व्यय**	**30602**
	✧ राजस्व प्राप्तियों से प्रतिशत	15.69
	✧ राजस्व व्यय से प्रतिशत	13.51
16.	**राजकोषीय देनदारियाँ (ऋण एवं अन्य दायित्व)**	**505574**
	सकल राज्य घरेलू उत्पाद से प्रतिशत	37.23

प्रौद्योगिकी के निम्न स्तर

- वर्तमान में दिन-प्रतिदिन नवीन तकनीकी का विकास हो रहा है। ये तकनीक हालाँकि महँगी है और उन्हें उत्पादन में लागू करने के लिए काफी कौशल वाले लोगों की आवश्यकता होती है।
- किसी भी नई तकनीक के लिए पूंजी और प्रशिक्षित तथा कुशल कर्मियों की आवश्यकता होती है। इसलिए, मानव पूंजी की कमी और कुशल श्रम का अभाव अर्थव्यवस्था में प्रौद्योगिकी के प्रसार में बड़ी बाधाएँ हैं।

स्वास्थ्य सेवा और कुपोषण

- राजस्थान अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं से जूझ रहा है, खास तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में। गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा सुविधाओं तक पहुँच सीमित है, जिससे बीमारियों और अपर्याप्त पोषण का प्रचलन बढ़ रहा है।
- बच्चों और महिलाओं में कुपोषण एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय बना हुआ है, जिसे बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं, जागरुकता कार्यक्रमों और पोषण संबंधी सहायता के माध्यम से संबोधित करने की आवश्यकता है।

लैंगिक असमानता और सामाजिक मुद्दे

- राजस्थान में लैंगिक असमानता, बाल विवाह और जातिगत भेदभाव जैसे सामाजिक मुद्दे लगातार सामने आ रहे हैं।
- महिलाओं को अक्सर शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने के सीमित अवसरों का सामना करना पड़ता है।
- लिंग आधारित भेदभाव को खत्म करना, महिला सशक्तिकरण में सुधार करना और सामाजिक समानता को बढ़ावा देना राज्य के समग्र विकास और प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है।
- उल्लेखनीय है कि राज्य में जल संकट एवं सूखे से लेकर गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और सामाजिक मुद्दों तक कई चुनौतियाँ हैं।
- उपरोक्त समस्याओं को दूर करने के लिए सरकारी हस्तक्षेप, सार्वजनिक भागीदारी और सतत विकास रणनीतियों को शामिल करते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देना

- राजस्थान सरकार को अनुसंधान एवं विकास, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, स्टार्टअप्स और इनक्यूबेटर्स को समर्थन देकर राज्य में नवाचार और उद्यमशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।
- सरकार को शिक्षा जगत, उद्योग और सरकार के बीच सहयोग को भी सुविधाजनक बनाना चाहिए ताकि एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाया जा सके जो नए विचारों, उत्पादों, प्रक्रियाओं और समाधानों को उत्पन्न कर सके।
- सरकार को बौद्धिक संपदा अधिकारों की भी रक्षा करनी चाहिए तथा पेटेंटिंग और लाइसेंसिंग को प्रोत्साहित करना चाहिए।

असमानता और गरीबी का समाधान

- सरकार को प्रगतिशील कराधान नीतियों को लागू करके राज्य में असमानता और गरीबी का समाधान करना चाहिए, जिससे आय और धन को अमीरों से गरीबों में पुनर्वितरित किया जा सके।
- सामाजिक कल्याण योजनाओं की कवरेज और गुणवत्ता का भी विस्तार सरकार को करना चाहिए, जो समाज के गरीब और कमजोर वर्गों को बुनियादी आय सहायता, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य बीमा, शिक्षा छात्रवृत्ति, आवास सब्सिडी और कौशल विकास प्रदान कर सकें।
- महिलाओं, अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों आदि को समान अधिकार, अवसर और आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी सुनिश्चित करके उन्हें सशक्त बनाने के लिए सामाजिक संगठनों एवं राज्य सरकार द्वारा प्रयास किये जाने चाहिए।

जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणीय क्षरण को कम करना

- राजस्थान सरकार को हरित नीतियों को अपनाकर राज्य में जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय गिरावट को कम करना चाहिए, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन (जीएचजी) को कम किया जा सके।
- राज्य में नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा दिया जा सके, ऊर्जा दक्षता में वृद्धि की जा सके, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण किया जा सके, जैव विविधता की रक्षा की जा सके और अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार किया जा सके।
- सरकार को ऐसे अनुकूलन उपायों को भी लागू करना चाहिए जो बाढ़, सूखा, चक्रवात, गर्मी की लहर आदि जैसे जलवायु झटकों के प्रति लचीलापन बढ़ा सकें।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. राजस्थान की अर्थव्यवस्था में मुख्य रूप से भागीदार कृषि को प्रभावित करने वाला कारक है?
(A) वर्षा की कमी एवं अपर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ
(B) शिक्षा और साक्षरता
(C) वनोन्मूलन
(D) नवाचार एवं उद्यमशीलता **[A]**

2. राजस्थान की अर्थव्यवस्था के समक्ष आने वाली प्रमुख समस्याओं में सम्मिलित हैं?
(A) तीव्र जनसंख्या वृद्धि (B) साक्षरता की कमी
(C) जल की कमी (D) उपर्युक्त सभी **[D]**

3. राजस्थान की अर्थव्यवस्था के समक्ष आने वालीव चुनौतियों को किस प्रकार कम किया जा सकता है?
(A) नवाचार एवं उद्यमशीलता को बढ़ाना
(B) बुनियादी ढांचे का विकास
(C) साक्षरता का उच्च स्तर
(D) उपर्युक्त सभी **[D]**

4. राज्य की अर्थव्यवस्था निम्न में से किससे प्रभावित नहीं होती है?
(A) प्रौद्योगिकी का निम्न स्तर
(B) अपर्याप्त सिंचाई सुविधाओं के कारण पैदावार की कमी
(C) अधिक उपज देने वाली फसलों का उत्पादन
(D) सड़क, रेलवे, बिजली, पानी जैसे पर्याप्त बुनियादी ढांचे का अभाव **[C]**

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

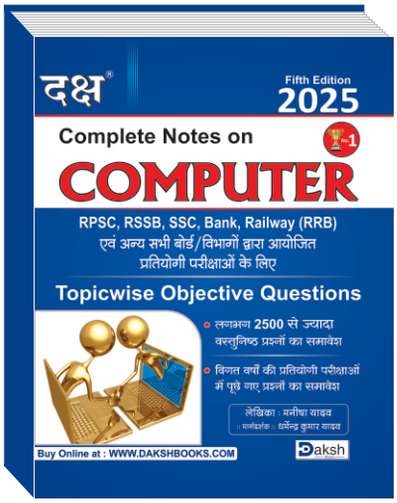

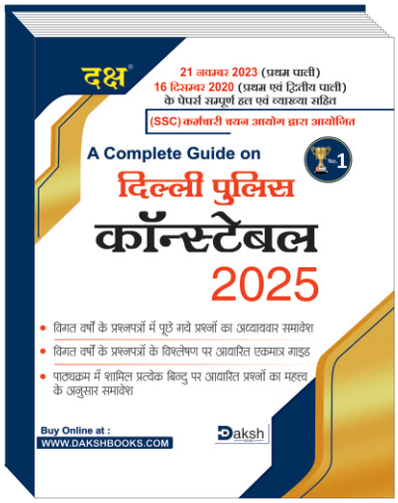

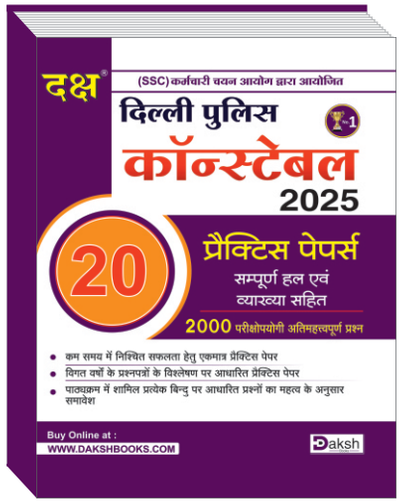

DAKSH PUBLICATIONS
(A Unit of College Book Centre)
A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)
फोन नं. 0141-2604302
Code No. D-816 | ₹ 650/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु
WWW.DAKSHBOOKS.COM
पर ORDER करें

★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★